



Հայկական գիտահետազոտական հանգույց Armenian Research & Academic Repository



Սույն աշխատանքն արտոնագրված է «Ստեղծագործական համայնքներ
ոչ առևտրային իրավասություն 3.0» արտոնագրով

**This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonComercial
3.0 Unported (CC BY-NC 3.0) license.**

Դու կարող ես.

պատճենել և տարածել նյութը ցանկացած ձևաչափով կամ կրիչով
ձևափոխել կամ օգտագործել առկա նյութը ստեղծելու համար նորը

You are free to:

Share — copy and redistribute the material in any medium or format

Adapt — remix, transform, and build upon the material

Ltin
2129-9130

1999

卷之三

卷之三

卷之三

ԿՈՍՏՈՎԱՆՈՒԹԻՒՆՔ

ՈՒՐՈՒՄՆ

ՔՐԻՍՏՈՆԵԱՅ ԿՄԱՍՏԱՍԻՐԻ.

小説の翻訳と出版

新書の翻訳

1900年2月號　新書の翻訳

新書の翻訳

新書の翻訳

新書の翻訳

新書の翻訳

新書の翻訳

Paris. — Imprimerie de Schiller aîné, 11, Fg-Montmartre

ԵՊՍՏՈՎԱՆՈՒԹԻՒՆ

ՈՒՐՈՒՄՆ

ՔՐԻՍՏՈՆԵԱՅ ԿՄԱՍՏԱՍԻՐԻ

զոր շարագրեաց

ՅՈՎՈՒՔՓ ՏՐՈԶ

Կաճառորդ ձեմաքանին Փարիզու.

Թարգմանեաց ի մերս

Հ. ԳԱԲՐԻԵԼ ՎԱՐԴԱՊԵՏ ԱՅՎԱԶՈՎԻ

—————
—————

Ի ՓԱՐԻԶ

Ի ՏՊԱՐԱՆԻ ՇԻԼԼԵՐՈՒ

1854

中華人民共和國郵政總局

郵政編碼：200003 郵政局名稱：上海市

東092 中華人民共和國

42130-60

29 2135

Այս փոքրիկ գրուածքս յաւելուած մըն է ԽՈՐՃՐԴԱ-
ՇՈՒԹԻԹԻՆՔ ՅԱՂԱԳՍ ՔՐԻՍՏՈՍԱԿԱՆ ՀՈՒՍՈՑ
անունով գրքուկիս . ասոր մէջ ծերունոյ մը ըրած
վերջին դիտողութիւնները դրուած են, եւ ես եմ այն
ծերունին, որ Երիտասարդութեանս օրերը մէջ կըրե-
րեմ՝ փափաքելով որ այն հասակիս յանցանացը քաւու-
թիւն գտնեմ :

Ի՞նչպէս կընամ զիշել այս Երկրորդ գրքոյկս հա-
նելու ատեն որ եթէ առաջինն այնպիսի աղեկ ընդունե-
լութիւն գտաւ՝ պատճառը այն պատուաւոր նպաստն
էր որ տուաւ անոր անմահական լիշտակի արժանի
հայրապետը*, այն սուրբ նահատակն որ աւետարանին
սորվեցուցած անձնանուեր Եղբայրսիրութեան այնպի-
սի սքանչելի օրինակ տուաւ մեզի : Աչքերնուս առջեւ
ըերենք այն քաջ հովուապետը մշտնջենաւոր խաղա-
ղութեան ընակարանին մէջ, եւ աղօքք ընենք որ իւր
մարդկային ազգիս համար ըրած մաղրանքները կա-
տարուին :

* Տես Խորհրդածութեանց սկիզբը : — Գերապատիւ
Գիտնեսիոս Աֆր՝ Փարիզու արքեպիսկոպոսը, 1848ին
ելած քաղաքական պատերազմը դադրեցընելու մըս-
քով՝ կոուոյն տեղը զնաց, ու գնտակէ մը զարնուելով
վախճանեցաւ. թ :

100
101
102
103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120
121
122
123
124
125
126
127
128
129
130
131
132
133
134
135
136
137
138
139
140
141
142
143
144
145
146
147
148
149
150
151
152
153
154
155
156
157
158
159
160
161
162
163
164
165
166
167
168
169
170
171
172
173
174
175
176
177
178
179
180
181
182
183
184
185
186
187
188
189
190
191
192
193
194
195
196
197
198
199
200
201
202
203
204
205
206
207
208
209
210
211
212
213
214
215
216
217
218
219
220
221
222
223
224
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
239
240
241
242
243
244
245
246
247
248
249
250
251
252
253
254
255
256
257
258
259
260
261
262
263
264
265
266
267
268
269
270
271
272
273
274
275
276
277
278
279
280
281
282
283
284
285
286
287
288
289
290
291
292
293
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
308
309
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
322
323
324
325
326
327
328
329
330
331
332
333
334
335
336
337
338
339
340
341
342
343
344
345
346
347
348
349
350
351
352
353
354
355
356
357
358
359
360
361
362
363
364
365
366
367
368
369
370
371
372
373
374
375
376
377
378
379
380
381
382
383
384
385
386
387
388
389
390
391
392
393
394
395
396
397
398
399
400
401
402
403
404
405
406
407
408
409
410
411
412
413
414
415
416
417
418
419
420
421
422
423
424
425
426
427
428
429
430
431
432
433
434
435
436
437
438
439
440
441
442
443
444
445
446
447
448
449
450
451
452
453
454
455
456
457
458
459
460
461
462
463
464
465
466
467
468
469
470
471
472
473
474
475
476
477
478
479
480
481
482
483
484
485
486
487
488
489
490
491
492
493
494
495
496
497
498
499
500
501
502
503
504
505
506
507
508
509
510
511
512
513
514
515
516
517
518
519
520
521
522
523
524
525
526
527
528
529
530
531
532
533
534
535
536
537
538
539
540
541
542
543
544
545
546
547
548
549
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
559
560
561
562
563
564
565
566
567
568
569
569
570
571
572
573
574
575
576
577
578
579
579
580
581
582
583
584
585
586
587
588
589
589
590
591
592
593
594
595
596
597
598
599
599
600
601
602
603
604
605
606
607
608
609
609
610
611
612
613
614
615
616
617
618
619
619
620
621
622
623
624
625
626
627
628
629
629
630
631
632
633
634
635
636
637
638
639
639
640
641
642
643
644
645
646
647
648
649
649
650
651
652
653
654
655
656
657
658
659
659
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
669
670
671
672
673
674
675
676
677
678
679
679
680
681
682
683
684
685
686
687
688
689
689
690
691
692
693
694
695
696
697
698
699
699
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
709
710
711
712
713
714
715
716
717
718
719
719
720
721
722
723
724
725
726
727
728
729
729
730
731
732
733
734
735
736
737
738
739
739
740
741
742
743
744
745
746
747
748
749
749
750
751
752
753
754
755
756
757
758
759
759
760
761
762
763
764
765
766
767
768
769
769
770
771
772
773
774
775
776
777
778
779
779
780
781
782
783
784
785
786
787
788
789
789
790
791
792
793
794
795
796
797
798
799
799
800
801
802
803
804
805
806
807
808
809
809
810
811
812
813
814
815
816
817
818
819
819
820
821
822
823
824
825
826
827
828
829
829
830
831
832
833
834
835
836
837
838
839
839
840
841
842
843
844
845
846
847
848
849
849
850
851
852
853
854
855
856
857
858
859
859
860
861
862
863
864
865
866
867
868
869
869
870
871
872
873
874
875
876
877
878
879
879
880
881
882
883
884
885
886
887
888
889
889
890
891
892
893
894
895
896
897
898
899
899
900
901
902
903
904
905
906
907
908
909
909
910
911
912
913
914
915
916
917
918
919
919
920
921
922
923
924
925
926
927
928
929
929
930
931
932
933
934
935
936
937
938
939
939
940
941
942
943
944
945
946
947
948
949
949
950
951
952
953
954
955
956
957
958
959
959
960
961
962
963
964
965
966
967
968
969
969
970
971
972
973
974
975
976
977
978
979
979
980
981
982
983
984
985
986
987
988
989
989
990
991
992
993
994
995
996
997
998
999
999
1000

Այս փոքրիկ գրուածքս յաւելուած մըն է « Խորհըրդածութիւնք յաղազս Քրիստոսական հաւատոյ » անունով գրքուկիս. ասոր մէջ ծերունոյ մը ըրած վերջին դիտողութիւնները դրուած են, եւ ես եմ այն ծերունին որ Երիտասարդութեանս օրերը մէջ կըքերեմ՝ փափաքելով որ այն հասակիս յանցանացը քաւութիւն գտնեմ:

Ի՞նչպէս կընամ ցիշել այս Երկրորդ գրքոյկս հանելու ատեն որ Երեք առաջինն այնպիսի աղեկ ընդունելութիւն գտաւ՝ պատճառը այն պատուաւոր նպաստն էր որ տուաւ անոր անմահական լիշտակի արժանի հայրապետը¹, այն սուրբ նահատակն որ աւետարանին սորվեցուցած անձնանուէր Եղբայրսիրութեան այնպիսի սքանչելի օրինակ տուաւ մեզի : Աչքերնուս առջեւը երենք այն քաջ հովուապետը մշտնջենաւոր խաղաղութեան ընակարանին մէջ, եւ աղօքք ընենք որ իւր մարդկային ազգին համար ըրած լմադրանքները կատարուին :

¹ Տես Խորհրդածութեանց սկիզբը :

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102
103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120
121
122
123
124
125
126
127
128
129
130
131
132
133
134
135
136
137
138
139
140
141
142
143
144
145
146
147
148
149
150
151
152
153
154
155
156
157
158
159
160
161
162
163
164
165
166
167
168
169
170
171
172
173
174
175
176
177
178
179
180
181
182
183
184
185
186
187
188
189
190
191
192
193
194
195
196
197
198
199
200
201
202
203
204
205
206
207
208
209
210
211
212
213
214
215
216
217
218
219
220
221
222
223
224
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
239
240
241
242
243
244
245
246
247
248
249
250
251
252
253
254
255
256
257
258
259
260
261
262
263
264
265
266
267
268
269
270
271
272
273
274
275
276
277
278
279
280
281
282
283
284
285
286
287
288
289
290
291
292
293
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
308
309
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
322
323
324
325
326
327
328
329
330
331
332
333
334
335
336
337
338
339
340
341
342
343
344
345
346
347
348
349
350
351
352
353
354
355
356
357
358
359
360
361
362
363
364
365
366
367
368
369
370
371
372
373
374
375
376
377
378
379
380
381
382
383
384
385
386
387
388
389
390
391
392
393
394
395
396
397
398
399
400
401
402
403
404
405
406
407
408
409
410
411
412
413
414
415
416
417
418
419
420
421
422
423
424
425
426
427
428
429
430
431
432
433
434
435
436
437
438
439
440
441
442
443
444
445
446
447
448
449
450
451
452
453
454
455
456
457
458
459
460
461
462
463
464
465
466
467
468
469
470
471
472
473
474
475
476
477
478
479
480
481
482
483
484
485
486
487
488
489
490
491
492
493
494
495
496
497
498
499
500
501
502
503
504
505
506
507
508
509
510
511
512
513
514
515
516
517
518
519
520
521
522
523
524
525
526
527
528
529
530
531
532
533
534
535
536
537
538
539
540
541
542
543
544
545
546
547
548
549
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
560
561
562
563
564
565
566
567
568
569
570
571
572
573
574
575
576
577
578
579
580
581
582
583
584
585
586
587
588
589
590
591
592
593
594
595
596
597
598
599
600
601
602
603
604
605
606
607
608
609
610
611
612
613
614
615
616
617
618
619
620
621
622
623
624
625
626
627
628
629
630
631
632
633
634
635
636
637
638
639
640
641
642
643
644
645
646
647
648
649
650
651
652
653
654
655
656
657
658
659
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
670
671
672
673
674
675
676
677
678
679
680
681
682
683
684
685
686
687
688
689
690
691
692
693
694
695
696
697
698
699
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
710
711
712
713
714
715
716
717
718
719
720
721
722
723
724
725
726
727
728
729
720
721
722
723
724
725
726
727
728
729
730
731
732
733
734
735
736
737
738
739
730
731
732
733
734
735
736
737
738
739
740
741
742
743
744
745
746
747
748
749
740
741
742
743
744
745
746
747
748
749
750
751
752
753
754
755
756
757
758
759
750
751
752
753
754
755
756
757
758
759
760
761
762
763
764
765
766
767
768
769
760
761
762
763
764
765
766
767
768
769
770
771
772
773
774
775
776
777
778
779
770
771
772
773
774
775
776
777
778
779
780
781
782
783
784
785
786
787
788
789
780
781
782
783
784
785
786
787
788
789
790
791
792
793
794
795
796
797
798
799
790
791
792
793
794
795
796
797
798
799
800
801
802
803
804
805
806
807
808
809
800
801
802
803
804
805
806
807
808
809
810
811
812
813
814
815
816
817
818
819
810
811
812
813
814
815
816
817
818
819
820
821
822
823
824
825
826
827
828
829
820
821
822
823
824
825
826
827
828
829
830
831
832
833
834
835
836
837
838
839
830
831
832
833
834
835
836
837
838
839
840
841
842
843
844
845
846
847
848
849
840
841
842
843
844
845
846
847
848
849
850
851
852
853
854
855
856
857
858
859
850
851
852
853
854
855
856
857
858
859
860
861
862
863
864
865
866
867
868
869
860
861
862
863
864
865
866
867
868
869
870
871
872
873
874
875
876
877
878
879
870
871
872
873
874
875
876
877
878
879
880
881
882
883
884
885
886
887
888
889
880
881
882
883
884
885
886
887
888
889
890
891
892
893
894
895
896
897
898
899
890
891
892
893
894
895
896
897
898
899
900
901
902
903
904
905
906
907
908
909
900
901
902
903
904
905
906
907
908
909
910
911
912
913
914
915
916
917
918
919
910
911
912
913
914
915
916
917
918
919
920
921
922
923
924
925
926
927
928
929
920
921
922
923
924
925
926
927
928
929
930
931
932
933
934
935
936
937
938
939
930
931
932
933
934
935
936
937
938
939
940
941
942
943
944
945
946
947
948
949
940
941
942
943
944
945
946
947
948
949
950
951
952
953
954
955
956
957
958
959
950
951
952
953
954
955
956
957
958
959
960
961
962
963
964
965
966
967
968
969
960
961
962
963
964
965
966
967
968
969
970
971
972
973
974
975
976
977
978
979
970
971
972
973
974
975
976
977
978
979
980
981
982
983
984
985
986
987
988
989
980
981
982
983
984
985
986
987
988
989
990
991
992
993
994
995
996
997
998
999
990
991
992
993
994
995
996
997
998
999
1000

ԹԻՄՏՈՎԱՆՈՒԹԻՒՆՔ

ՈՒՐՈՒՄՆ

ՔՐԻՍՏՈՆԵԱՅ ԻՄԱՍՏԱՍԻՐԻ

Քրիստոնեական հաւատոյ սկիզբն ու
վախճանը սկը է. այս հաւատքս Արարծին
Աստուծոյ հայրական սիրոյն ծնունդն է,
և ասով կը յորդորուինք որ զինքը սի-
րենք որդիական սիրով, և զամեն մարդ
եղբայրական սիրով : Քրիստոնեութեան
պատուիրանաց մեջ քաղցրութիւն մը կայ
որ անպատմելի քան է, թէպէտ եւ մեկլ քա-
նին առջի բերան սաստիկ խիստ երեւնան :
Այն պատուիրանն որ կը թէ « յԱստուծոյ
երկիր » (Աստուծմէ վախցիր,) ինչո՞ւ պիտի

սրամեցըներ զմեզ՝ երկ զԱստոած սիրել
զիտնայինք. ոչապաքէն Աստոած ծառայ-
ական երկիւղը չուզեր, ու որդիական եր-
կիւղ կըսպահանջէ: Ինչ ցաւալի բան է
խեղճ մեղաւորացս վիճակը. զղջումի գա-
լէն կըսուկանք ու կըզգուշանանք. չենք
մտածեր թէ զղջումը մեզի մեծ օգնութիւն
է, եւ առանց անոր ոչ մխիթարութիւն կայ
եւ ոչ հանգստութիւն: Ստրջանքը (այս
ինքն խղճմտանքը զարնելով՝ եղածին
վրայ ցաւիլ) որ մեծամեծ մեղաւորաց
սոսկալի եւ վերջին կանչուիլն է առ Աս-
տուած, ստրջանքը կըսեմ՝ ամենեւին ոյժ
չունենար՝ երկ հետը մեկտեղ չզտնուի քո-
ղութիւն առնելու յոյսը: Որպիսի զրու-
թեամբ, որչափ խնամօք, կընամ նաեւ
ըսել թէ ինչ հնարագէտ զորովանօք ուզեր
է Հայրն մեր երկնաւոր դիւրացընել մեզի
իրեն հետ հաշտուելու ճանապարհները: Անքիւ ապացոյցներ ունինք իրեն մեզի
ներել ուզելուն. անոնց մէջ ամենէն սրտա-
շարժն այս երեւցեր է ինծի. Աստուած քող
կուտայ որ մինչեւ մեր մոլորութիւններն
ու սիսալմունքներն անզամ կարենան մե-

զի Փրկութեան հնարք ըլլայ՝ երե մեր այն
յանցանքները մեյմէկ գործիք ընենք զու-
րիշները պահելու նոյն մոլորութիւններէն
ու սխալմունքներէն :

Քանի որ Աստուծոյ այս բարերարու-
թիւնը միտքս կըրերեմ, մեկէն ի մեկ իմ
վրաս կը դառնայ մտածութիւնս : Սիրելի
ընթերցող, ես երկար տաեն ձշմարտու-
թիւնը չուզեցի ճանչնայ, Քրիստոսի Փըրկ-
չին մերոյ հաւատքին ոյժն ու քաղցրու-
թիւնը չուզեցի հասկընայ : Աստուած տայ
որ իմ ցաւագին խոստովանութիւնքս քա-
նի մը անձանց օգտակար ըլլան : Այսու
յուսով է ահա որ կը յառեմ այն դժկամա-
կութեան որով իւր պատիւը ճանչցող
մարդը չուզեր ինքիր վրայ խօսիլ, թէպէս
և իր անձին դէմ զանգատ ըլլայ խօսածը :

Ամենակարողն Աստուած իւր անհուն
ողորմութեամբը զանգան ճամբաներ կը
բռնէ՛ մոլորեալ մտքերը իրեն դարձընելու
համար : Մարդիկ կան որ իրենց կենաց
մեծ մասը անհաւատութեան մէջ անցընելէն

Ետեւ մեռնելու մօտ առեն մոլորոքիւննին
կը հասկընան ու բոլոր սրտանց զղջումի
կուգան։ Բարեպաշտ անձինք այսպիսի
աստուածային զքութիւն մը տեսնելով՝ մե-
կէն մտքերնին կը բերեն այն սրտաշարժ
առակներն ու օրինակները որ կը ցուցը-
նեն թէ Աստուած գորովագուք հայր մը եւ
վեհանձն ու ներողամիտ տէր մի է, մեկէն
կը փղձկի սրտերնին ու փառք կուտան
Աստուծոյ։ Բայց անհաւան ու անհաւան
անձինք սովորաբար մեծ բանի մը տեղ չեն
դներ այն յանկարծական դարձերն որ
մեռնելու մօտ ժամանակներ կը պատահին։
Վասն զի որը կըսէ թէ գործարանաց տկա-
րանալն է, որն այ կըհամարի թէ նախա-
պաշարմանց ու տղայութեան սարսափ-
ներուն արթըննալն է այն դարձերուն
պատճառ։ Դնենք թէ յայտնի ապացոյցնե-
րով հասկըցուցիր ասոնց թէ մեռնողին
մինչեւ վերջի շունչը տայու առեն խելքը
զլուխն էր. պատասխան կուտան թէ զար-
մանք չէ, վասն զի խոհեմութեամբ շարժեր
է, վախցեր է որ իր պատճառաւ ընտա-
նիքը հասարակացքերանը չիյնան։ Ումանք

այ այս կըսեն քէ ո՛ գիտէ, խեղճ հիւանդը
տեսնելով որ կրօնամոլ մարդիկ չորս դին
առեր են, անոնց ձեռքէն ազատելու համար
խարեր է զիրենք, ուզեր է հանգիստ սըր-
տով մեռնիլ :

Չատ անզամ աստուածային նախա-
խնամուրիւնը զմեզ դարձի բերելու համար՝
ձախորդուրիւնը ձեռք կառնու: Իրաւ է որ
հասարակ մարդիկ՝ կամ ցած հոգւոյ տէր
անձինք՝ երբոր իրենց փառափրու-
թեանը մեջ խարուին, սրտերնին կըկո-
տրի, ու քէ որ փոքրոգի ու կարճամիտ
են՝ կեանքերնին կըկարճնայ. բայց այն
մարդիկն որ արժանի են աջուրնին բացուե-
լու եւ իրենց խարեւուրենէն ազատելու,
երբոր իրենց փափաքանացը չհասնին՝
աւելի խելք կըսորվին ու աւելի այ սիրո
կառնուն. եւ իրենց այն նոր վիճակին մեջ
այնպիսի երջանկուրիւն մը կըվայելեն որ
սուտ եւ ընդունայն յաջողուրեանց աղ-
մուկն ու փայլմունքը ունեցած ատեննին
փնտոեր էին ու չեին զտած: Մարդուս հա-
մար ամեննեն սարսափելի ձախորդուրիւն-

ներն անոնք չեն որ իր հպարտութիւնը, ան
յագութիւնն ու անձնասիրութիւնը տակն-
ու վրայ կընեն. հապա անոնք են որ մար-
դուս սիրու կտոր կտոր կընեն, եւ մարդ-
կային ուժով անոնց դեմ դիմանալն
անկարելի կըլլայ: Օրինակի համար, ինչ
սոսկալի բան է որ մարդու իր անձեւ աւելի
սիրած անձինքը կորսընցընէ, եւ քիչ մը
առաջ ընտանեաց բազմութեան մեջ գրո-
նուողը յանկարծակի միս-մինակ մնայ:
Այսպիսի դժբաղդ եւ անօգնական խեղ-
ճերը որու պիտի ապահինեին՝ երկ Աս-
տուած ինքը շմօտենար քովերնին ու
իրենց պաշտպան եւ ձեռնոտ ըլլար: Թէ
որ ըսեի թէ անհաւան ու թերահաւան մար-
դիկ աստուածպաշտութեան միսիրարանք-
ներն ու բարիքն այ տեսնեն՝ հոգերնին չէ,
վախւեմ թէ զրպարտութիւն կըլլար ըրած.
բայց այս իրաւ է որ ամենայն ջանք կընեն
իրենք առջի թերան՝ որ զանազան իմաս-
տակութիւններով՝ սրտերնին շարժող ըզ-
զացմունքները մեկէն ի մեկ տկարացը-
նեն մեոցընեն. Եսքն այ սիրու կառնուն,
ու դառն դառն կորուստներու պատճա-

ուա եղած դարձերը օքչափ ալ քրիստոնէութեան հետեւանքները կարծուին՝ կարհամարհեն ու կըմերժեն։ Ո՞վ չզիտեր թէ, կըսեն, դժբաղդութիւնը մարդուս միտքը կըպղտորէ ու դխրահաւանութեան մէջ կըձգէ։ Ո՞վ կընայ ըսել թէ մարդս այն ատեն աւելի յաւ խելք կըբանեցընէ որ սրտին ցաւէն քոյոր կարողութիւնները տկարացած են ու չեն քողուր որ դժուար խնդիրներուն վրայ խորունկ մտածէ։ Մէջերնին ամեննէն աւելի ներողամիտ կարծուածները կըհամարին թէ խեղճ մարդկանց Աստուծոյ իրենց տուած մխիրարանքներուն համար երախտագէտ ըլլալը յանցանք մը չէ։ Ի՞նչ պիտի ընես, կըսեն, երբոր իրը սոսկալի է՝ տկար մարդիկ կարօտ են իրենք զիրենք խարխըրելու։

Աստուծոյ նախախնամութիւնը այնպիսի ճամբաններով հաճեցաւ իմ մոլորութիւններս փարատել որ մինչեւ հիմա լիշտակած մեկնութիւններուս առարկութիւններուս տակը ամենեւին չեն իյնար։ Ամէն

կրողմանք ոյժս հասակս տեղն էր, վիճակս
ալ շատ զեղեցիկ։ Շատ դիտողութիւններ
ըրի, տեսայ որ մարդուս ինելքը ամեն ժա-
մանակ ապահով առաջնորդ մը չէ իրեն.
հասկըցայ թէ ո՞ր բանին մեջ է այն երջան-
կութիւնն որ իմաստասիրութիւնը ոչ երբէք
պիտի կարենայ տայ մարդուս, եւ վերջա-
պէս տեսայ որ սրտիս մեջ ընդարոյս եւ
ընածին կարծած նախապաշտմունքներս
ամենն ալ փնտացան :

Տղայութեանս ատեն չեմ գիտեր ինչ վախս
մը կար սրտիս մեջ որ եկեղեցիներէն նե-
ռու կըքայէի։ Թից անգամ կըդար որ եկե-
ղեցի մը մտնեի ու շենքին մեծութենէն՝ կա-
մարներունքարձրութենէն աչքս շառնուեր
ու գյուխս չպարտէր. երբեմն ալ այնպէս
կըկանչուրուեի որ քովիններս կըստի-
պուէին շուտ մը զիս դուրս հանելու : Այս
կերպով՝ Աստուծոյ տանը մեջ առաջին
զգացմունքն որ ունեցեր եմ՝ սոսկում ու
տժզոհութիւն եղեր է : Դալրոցի մեջ ալ բա-
րեպաշտական կըքութիւններէն ձանձրա-
ցայ, մանաւանդ մեկ բանիւն որ անտա-

նելի կերեւնային ինծի, ասով ալ սրտիս
մէջ բարեպաշտութեան դէմ գէշ առելու-
թիւն մը մտաւ :

Որչափ որ ուսումնասէր եի բնութեամբ,
այնչափ ալ դպրոցական հին ու միակերպ
ոճը ձանձրալի կուզար ինծի : Սաստիկ
փափաք ունեի ուսումնական մարդու
անուն հանելու. ուստի դեռ ձարտասա-
նութեան տարւոյն մէջ եղած ատենս ող-
բերգութիւն մը շինեցի ամբողջ հինգ արա-
րուածով. տարակոյս չկայ որ շատ անհամ
քան եր շարադրածս, սակայն ես կըզմայ-
լիի վրան. ինծի մտերիմ մէկ հատիկ բա-
րեկամ մը ունեի, այն ալ զրուածքս գովե-
լին չեր կղտանար : Երբոր Փիլիսոփայու-
թեան դասին հասայ՝ ալ ձանձրութեանս
չափն անցաւ. քանի որ խժական յատի-
ներէնով մը եղած անվերջանալի վեճերը
կըլսէի, այն ալ միշտ հաւաքարանական
ձեւով՝ որով խիստ պարզ խնդիրներն ան-
գամ անխմանալի կըլլան, ալ բոլորովին
զգուեցայ : Ըսի հօրս թէ չեմ դիմանար ես
այս ձանձրալի քաներուն. ան ինչ ուրա-

խուրիւն եր ինծի երբոք տեսայ թէ ինքն
ալ հաւանեցաւ որ անկեց ետքը ազատո-
րէն աշխատիմ ուզածիս պէս իր ձեռաց
տակը. եւ նոյն իրիկունը քանի մը փիլի-
ստիայական գրքեր տուաւ ինծի, որոնց
մեկն ալ Կարդեսիոսի Յաղագս ոճոյ ըստ-
ած ձառն եր¹:

Մեյմը որ դպրոցէն ազատեցայ՝ հարկաւ
պիտի ազատէի նաև չափազանց ջերմե-
ռանդուրիւններէն. վասն զի արդէն առա-
ջուց դրած էի միտքս որ այնպիսի ջերմե-
ռանդուրիւնները համառօտեմ. բայց խիստ
սակաւ ժամանակէն ամենն ալ ծայլեցի
մեկդի զրի : Քրիստոնեուրեան դէմանդա-
դար ծաղրածուրիւններ կը լսէի, կարողու-
րիւն չկար քովս անոնց հակառակենալու.
վասն զի բարեպաշտական խրատներու
ամենեւին ուշ դրած չըլլալով, հաւատքս

¹ Կարդեսիոս կամ Տէքարը՝ կարդեսեան ըստւած փի-
լիստիայուրեան հիմնադիրն եր, եւ իրեն զիսաւոր կա-
նոն բռնած եր ազատ քննուրիւնն ու խորհրդածու-
րիւմը. Թ:

այնպիսի հաստատուն հիմանց վրայ հաստատուած չէր որ կարենայի այն մեր տեսնի կարծիքներուն դեմ դիմանալ։ Աւետասներորդ դարուն փիլիսոփայութիւնը ամեն տեղ տիրած էր. աստուածեանք⁴ ուրիշներուն մեջ ալ իրենց կարծիքները տարածելու համար՝ ոչ խորունկ գիտութեան կարօտ էին եւ ոչ ճիշդ տրամաբանական հակածառութեանց. անկրօնութիւնը նորաձեւութիւն մը եղած էր, եւ կարծես թէ ամեն մարդ օդին հետ մեկտեղ անտարբերութիւն ու անհաւատութիւն կը ծծէր։ Իմ գլխաւոր բանս զործս՝ մատենագրական հմտութիւն էր, ու շատ աղեկ ըրի որ բանաստեղծութիւնը թողուցի՛ արձակ շարադրութեան տուի ինքինքս. սակայն չորս դիս անհամար ձայներ անդադար կը կանչութուեին թէ « Քրիստոնեութեան բանը լմընցաւ, ասկէց ետքը մելմ՝ ալ պիտի չնորոգուի. » այնչափ յսեցի այս խօսքն որ միտքս դրի

⁴. Այն աղանդաւորք որ Աստուծոյ գոյութիւնը կը դաւանին, բայց աստուածային յայտնութիւնը կամ յայտնեալ կրօնը կուրանան. Թ. :

թէ կարծիք մը չէ սսիկայ, այլ անտարակուսելի ձմարտութիւն, եւ ըստայսմկրխօսէի հաւատոյ բաներուն վրայ այն մարդկանց նետ որ իրենց դարուն զիտութիւններովը լուսաւորուած էին։ Ան ատենի երիտասարդաց բոնած ճամբան այ աս էր։ Կրնար Աստուած աւելի սաստիկ կերպով պատժել իմ ապերախտութիւնս, բայց չըրաւ. կրնար բողուջ որ ես ալ իյնայի այն իմաստակներուն անարգութեան ու ցած հպարտութեանը մէջ որ կըպնդէին թէ Աստուած չկայ, մարդս ազատ չէ ուզածն ընելու, հապա զիտուն գալիքը պկոք է որ զայ, եւ բարոյական կամ բարի վարք ըսածնին տկարութիւն մի է որ ճարտար մարդիկ հնարեր են՝ անմիտներն ու տկարամիտները խարելու համար։ Ոչ, այս վերջին աստիճանի անարգութեան մէջ պիտի չիյնամ եղեր. Աստուած իր անհուն ողորմութեամբը ոչ երբեք բոլորովին ձեռքէ բողուց զիս, եւ ասոր համար որչափ այ փառք տամ իրեն՝ քիչ է։

Տեսայ եւ մեծապէս ու բախացայ որ

սրտիս մեջ նոր եռանդ մը կայ Աստուծոյ
վրայ գերազանց կարծիքներ ունենալու,
հոգւոց երջանիկ կամ թշուառ անմահու-
թեանը հաւտալու, եւ բարոյական օրի-
նաց սրբութիւնը ճանչնալու համար.
միտքս դրի քէ այ ինչպէս որ պէտք է զուտ
եւ անխառն ձղմարտութիւնը ձեռք ձգեր
եմ : Սակայն սրտիս մեջ մեծ անհանգստու-
թիւն մը կար. կը մտածէի քէ ինչ ցաւ պի-
տի ըլլայ հօրս երբոր իմանայ քէ որդին իր
հաւատքէն չէ. յոյս ալ չունեի որ կարե-
նամ երկար ատեն միտքս իրմէ ծած-
կել : Հասկըցաւ անիկայ իմ յանցանքս,
քանի մը անուշ ու խելացի խօսքերով
խրատեց զիս, եւ այնուհետեւ աւելցուց իր
սէրն իմ վրաս, ինչպէս որ բնական է մար-
դուս՝ աւելի տաք սրտով հոգ եւ խնամք
ունենալ իր սիրելի անձին վրայ՝ անոր
ծանը կերպով հիւանդացած ատենը : Այն-
չափ անոյշ կուզային ինձի այն երկնային
խրատներն որ երէ ինչպէս որ պէտք է
մտիկ ընեի՛ չեմ զիտեր քէ ծայրը մինչեւ
ուր պիտի երբար : Մօրս վախճանած
ատենը դեռ ես տղայ եի. ուրիշներն ալ

բարի դիտաւորութեամբ, բայց չափազանց նախանձայուզութեամբ՝ առանց աջ ու ձախ նայելու ծանր ծանր յանդիմանութիւններ տուին ինծի : Կրակ ու բոց բնաւորութիւն մը ունեի այն ատեն. որ եւ իցէ արգելք աչքիս բան մը չեր երեւար, եւ այնպիսի արգելքներու յաղթել չեի կրնար ալ նէ՝ գեր վախ զունեի անոնցմէ : Տեսնելուս պէս որ կարծիքս պաշտպանելու համար՝ ինքզինքս վտանգի մէջ դնել հարկ կըլլար՝ աւելի կըլյամառէի այն կարծեացս մէջ. այս կերպով մոլորութիւններս սրտիս մէջ արմատացան մնացին :

Թէավէտ եւ քայլած ճամբաս դարվար ու սահուն եր, բայց զանազան մոլորթիւններ զիս զլորել տանիլ չկըրցան : Որչափ որ հաւատոյ վարդապետութիւններէն ու բարեպաշտական կըրրութիւններէն կըխորշէի, նոյնչափ ալ ուղիղ բարոյականի սկզբունքներէն չեի ուզեր խոնորիլ : Ազգատոհմիս մէջ ալ այնչափ բարի օրինակներ ունեի այս բանիս համար որ այսպիսի բնաւորութիւն ունենալու զարմանք չեր. մասնա-

ւանդ թէ այս բնաւորութեամբս այնպիս
հօրս աչքը կըմտնեի որ ատենով մարդ ը-
լայուս վրայ ամենեւին չէր տարակուսեր.
անկեց ի զատ՝ կուզեի կերպով մը վրեժս
ալ հանել անոնցմէ որ դառն դատաւոր
կըլլային ինծի. կուզեի ցուցընել իրենց թէ
աստուածեանն ալ կրնայ քրիստոնեի մը
չափ եւ անկեց ալ աւելի լաւ կերպով կա-
տարել իր առ մարդիկ ունեցած պարս-
քերը. ձեռքէս զար նէ կատարեալ մարդ
պիտի ըլլայի որ իմ քոնած հաւատքիս
պատիւը պահեմ :

Քրիստոնեութեան դկմ առարկութիւն-
ներ փնտուելու համար ամենեւին ատեն
չանցուցի. եւ ինչ հարկ կար. ուրիշ-
ներն աշխատեր եին այս բանիս հա-
մար, եւ ես կարօտ չեի նոր բան սոր-
վելու աս կողմանէ: Միտքս դրած եի թէ
ամէն բանէ առաջ իմ զանքս այն պիտի
ըլլայ որ կարենամ ինքզինքս օրէ օր
աւելի լաւցընել: Թէավէտ եւ մեծ սէր
ունեի գրագիտութեան եւ իմաստասիրու-
թեան վրայ, բայց անկրօնութեան նահա-

սկսակին ¹ վրայ ոչ միայն ուրիշներուն
կատաղի համարմունքը չունեի, այլ եւ
զգուած էի անոր աներես լրբութենեն :
Քանի որ կրտեսնեի քէ իրեն պէս զերա-
զանց բանաստեղծ մը իր խելքին նախա-
տինք ըրեր և՝ Գաղղիոյ նրեշտականման
դիւցազնունոյն ² պատմութիւնը ծաղրելով
ու ծոմոկելովը, սիրոս կըկտրտէր : Անոր
Կանդիտոր ³ սկսայ կարդալ ու չկրցայ
լմընցընել . այն իր չարամիտ ծիծաղը,
այն մարդկային քշուառութեանց առջեւ
ըրած խեղկատակութիւնները՝ մարդուս
սիրտը կըտրտմեցընեն ու կըկոտրեն : Թե-
րեւս ասոնցմէ այ աւելի ցաւալի և իմաս-
տասիրութիւն պատմութեան ըսուած զիր-
քը, որ չէ քէ իմաստասիրութիւն և, այլ
պարսաւագիր ընդդեմ մարդկային ազգի.
Վասնզի անոր խօսքերուն նայելով՝ մարդս
ախտիցեւ մոլութեանց կծիկ մըն և՝ անարգ
եւ ատելի միանգամայն. այնպիսի արա-

¹ Վոյքեռ, դրօշակիրն աստուածեանց. Թ :

² Յովիաննա Տ'Արք, ազատարար Գաղղիոյ. Թ :

³ Պատմութիւն ամրարիշուն եւ անառակ. Թ :

բածը ինչ բանի կուզայ: Կրսիրեմ ես ազատութիւնը, կուզեմ որ ազատութեան յարզը ճանչցող ամէն ազգերն ալ ազատ ըլլան. բայց երբոր տեսայ թէ Վոլքեոի վրայ զմայլողները իրենք զիրենք աշխարհիս ազատութեան ախոյեաններ կը համարին՝ զարմացայ ու ամրէցայ անոնց մտածութեան խառնափնդորութեանը վրայ: Վասն զի թէ որ մարդս վագրեն ու կասիկեն բաղադրուած բան մի է, ալ ինչ բանի համար կուզես որ ազատ ըլլայ: Ցոկակապ բեր, շղթաներ բեր, կապէ կապկըսէ այդ հրեշը, մի բողուր որ ապականէ աշխարհս իր անզգամուրիւններովը:

Իմ սիրած ու բանեցուցած իմաստասիրութիւնս գործնական իմաստասիրութիւն էր. ուստի Մոնթայնին ձաշակք ըսուած գրքին վրայ կը զմայլէի¹: Տեսնելով որ այն գրքին մէջ մարդուս սրտին այնչափ գաղտ-

¹ Բարոյական իմաստասիրութիւն ընդարձակ, նանակեղ, թէ զեղեցիկ՝ բայց եւ երկրայական իմաստներով. Թ:

նիքները գուրս հանուած են եւ բարի
վարուց համար շատ օգտակար դիտողու-
թիւններ կան, յոյս առեր եփ որ այն գիրքը
կարդալովս՝ ատենէն առաջ փորձ կըլլամ
շատ բանի. այնպիսի բարեկամ մը դարձաւ
ինծի այն գիրքն որ ես իր միտքը կըհաս-
կընայի, ինքն ալ կարծես թէ իմ միտքը
կը հասկընար: Անոր հետ մեկտեղ երբեմն
ալ Ռվատիոսը կըկարդայի. Ետքը ուրիշ
գրքեր ալ ձեռքս ընկան որ աւելի շարժե-
ցին սիրտս, միտքս աւելի բարձրացուցին,
եւ աւելի մօտ երեցան այն կարծիքներուն
որ ունեի Աստուծոյ եւ առաքինութեան
վրայ: Ո՞րչափ անզամ կարդացեր եմ Կի-
կերոնին Անուրջք Սկիսկիոնի անունով
գրուածքը: Եմս սիրելի գրքերուն մէջ զիսա-
ւորներէն եին նաեւ Կիկերոնի Տուսկու-
լեանքը, եւ Յաղազս Պատշաճից գիրքը,
նմանապէս Ամիոյին բարգմանած Պլու-
տարքոսը:

Այն հասակին մէջ որ մարդս քիչ կըմըտ-
մտալ, ես ինծի սովորութիւն ըրի դիտո-
ղութիւնն ու խորհրդածութիւնը: Քիչ ատե-

Նի մեջ հասկըցայ որ աշխարհիս վրայ
մարդկանց մեծ մասը խարուած են, եւ
մտացածին օգուտներու ևտեւէ իյնալով՝
փուժ տեղը կըկօրսընցընեն այն ժամա-
նակն որ պիտի գործածէին Աստուծոյ
իրենց առջեւը դրած իրական ու աժան
բարիքները վայելելու. այն ատենենմիտքս
դրի որ չխարուիմ հասարակ ժողովրդեան
փառամոյ ու անկուզտ խենթութիւններէն.
զիտէի որ խիստ շատ մարդիկ մտքերնին
դրած են թէ այն հասարակ ժողովրդեան
կարգը չեն, եւ սակայն անոնց մեջ են:

Կենացս վրայ մեծ փոփոխութիւն մը
զայով՝ առաջադրութեանցս մեջ որչափ որ
խելացի բաներ կային աւելի հաստատուե-
ցան, եւ առանձնական կենցաղավարու-
թեանս մեջ անոնց գործադրութեանը հա-
մար քիչ դժուարութիւն քաղեցի : Սաստիկ
սեր մը ձգեցի օրիորդի մը վրայ՝ որուն
սիրելի յատկութիւնները իր զեղեցիկ դեմ-
քին վրայ ալ նկարուած կերեւնային : Քա-
ռասունեօրը տարի քշեց մեր երջանկու-
թիւնը, և իմ անոր վրայ ունեցած սերս ոչ

Երբէք բարեկամութեան դարձաւ. մինչեւ
հիմայ ալ նոյն սկըն ունիմ վրան՝ որդւոց և
բռանց եւ բռան որդւոց մէջ որ իմ ծե-
րութեանս նեցուկ ամրութեան են. բայց
որչափ ալ իրենց խնամքը սրտանց ու սկըն
սաստիկ ըստայ ինծի, չեմ կընար զգայ որ
իրենց մօրը մեղերնիս չգտնուիլը մեծ պա-
կասութիւն է մեզի :

Ամուսնութենու քանի մը տարի ետքը՝
զբաւորական աշխատութեանց վրայ ունե-
ցած սիրոյս պատճառաւ Փարիզ քաշուե-
ցայ: Քանի մը ճանչւորներ ունեի հոն որ
իրենց ազնիւ բնաւորութեամբը աւելի
պայծառութիւն մը կուտային իրենց հան-
ճարոյն: Հաստատուն բարեկամութեամբ
մը կապուեցայ հետերնին. տեսայ որ իրենք
սիրով կախորժին իմ համեստ բնակարանս
գալը, եւ այն երջանկաւու վիճակն որ
երազի պէս կըտեսնեի մտքովս եւ ձեռք
ձգել կըփափաքէի՝ զտած եղայ: Ասկէց
բնականաբար միտքս եկաւ որ զիրք մը
շարադրեմ, եւ հրատարակեցի ձաշակ
արուեստի երջանկաւու կենաց ըսուած

գիրքս։ Անկեց եռքը ետեւ եղայ հասկրնալու թէ մարդկային խելքը ինչ բարոյական սկզբունքներ եւ դրութիւններ հնարեր է ամեն երկիր եւ ամեն ժամանակ. ուստի սկսայ աս բանիս համար նիւթեր հաւաքել, եւ անոնցմով շարադրեցի այն գիրքս որ կըսուի Յաղագս Բարոյական իմաստափրութեան, կամ Յաղագս զանազան կարծեաց իմաստափրաց զմարդկային կենցաղավարութենէ։ Այս աշխատութիւնը այնպիսի ազդեցութիւն մը ըրաւ վրաս որ մտքս անզամ չէր անցած։

Գրեք ամեն անզամ որ բարոյականին վրայ կը մտմըստայի՝ այն միայն կընայէի թէ հանգիստ ապրող եւ զիտուն մարդկանց մտքին վրայ ինչ տեսակ ոյժ ունին բարոյական ուսմունքները։ Այլ եւ այլ դիտողութիւններ ըրած ատենս՝ սաստիկ մտադրութիւն մը ըրի այն ժամանակներուն վրայ որ քրիստոնեութիւնը պատճառ եղաւ աշխարհիս երեսը պատահած ամենէն ընդարձակ եւ ամենէն սաստիկ յեղափոխութեանը։

Երկու ճշմարտութիւն տեսայ որ ամենին տարակոյս չեն վերցըներ. մեկը այս որ բարոյականը տղայական խաղ մը կը լայ խելքի՝ թէ որ մարդկանց սիրտը անով չուզորուի. մեկն այ այս որ մարդկանց վիճակը լաւցընելու համար պէտք է նախ զիրենք լաւցընել:

Երբեմն երբեմն տարակոյսներ կուգային մտքիս թէ արդեօք մեր իմաստասիրական սկզբունքները այնչափ ոյժ ունին որ մեծամեծ նորոգութեանց պատճառ ըլլան։ Առջի բերան այսպիսի տարակոյսները մեկդի կը ձգէի։ Վասն զի քանի որ աջքս այն բարոյախօսներուն վրայ կը դարձընէի որ ամեն տեղ ու ամեն ժամանակ ըոլոր ջանքերնին բափեր են իմաստութիւնն ու երջանկութիւնը ծաւալելու մարդկանց մէջ, միտքս կը վառուէր կը բորբոքէր մարդկային ազգի բարեկամներուն այսպիսի վսեմ աշխատութիւնները տեսնելով, եւ սիրտս լուսով կը եցուէր։ «Սիրտ առնենք, յարատեւենք կը սէի, եւ անդադար մեր նպատակին ոիմենք. չկենանք ճամբուն վրայ

ու չհարցընենք թէ արդեօք ինչ յաջողութիւն պիտի գտնենք : » Մարդուս եռանդը բորբոքած ատեն՝ գեղեցիկ եւ ընդարձակ մտածութիւններուն ջափ եւսահման ջմնար . քայց որպէս զի իր քաջասրտութիւնը կոյր զկուրայն ջըլլայ, որպէս զի յարատեւութիւնը ծուռ բանի վրայ ջըլլայ, գիտնալու է թէ ինչ արգելքներ կրնան ելլել առջեւը, եւ ինչ հնարքներով պիտի յաղքէ անոնց : Աւրեմն ինչ հնարքներ ունին իմաստակը մեր կրիցն ու մոլուրեանց դեմ կոռուելու : Իրենց բարոյական զրուածքներն ու բնական օրէնքը : Այս ստոյգ է որ իրենց զրքերը, նաև այն զրքերն որ ուրիշներէն աւելի խրատական խոսքերով, խելացի իմաստներով, ճարտասան զրուցուածքներով լիցուն են, ամէն մարդու վրայ այ նոյն ազդեցութիւնը չեն ըներ, վասն զի շատը կան որ զանոնք ամենեւին չեն կարդար, կարդան այ նէ չեն հասկընար : Բարոյական իմաստասիրութեան վառաւոր ժամանակը, աշխարհիս մեծամեծ օգուտներ ըրած ժամանակը՝ այնատեմներն են որ անձոռնի օրէնսդրութեան մը ուժովը մարդիկ երկու կարգ

բաժնուած էին, այս ինքն քաղաքացիք եւ
զերիք, եւ այս' նոյն խոկ նին ատենի հոչա-
կաւոր հասարակապետութեանց մէջ։ Գե-
րիներուն բազմութիւնը վախովսանձուած՝
կարօտ չէր իմաստասիրութեան խրատ-
ներուն. ազատ մարդիկը միայն կրնային
մտիկ ընել անոնց։ Այն ատեն որ Յունաս-
տանի բարերեր հողը ճարտասաններ,
արուեստագետներ, բանաստեղծներ, Փի-
լիստիաներ կըհաներ, իմաստակրները
բազմարիւ դպրոցներ բացին՝ իրարմէ-
տարքեր ու մէկը քան զմէկալը զեղեցիկ։
Այն իմաստասկրները ոչ երե միայն իրենց
սկզբանցը վրայ խօսի կըսորվեցընէին,
այլ եւ մարդկանց բնաւորութիւնը կըզօ-
րացընէին, անոնց սրտին շարժմունքները
կանոնաւորելու կաշխատէին, եւ կուզէին
որ իրենց աշակերտաց վարքէն հաս-
կըցուի իրենց սորվեցուցած բաներուն
ողջմտութիւնը։ Ենց մեծ պատիւ, որչափ
յարգ ուներ այն զիտութիւնն որ քանի մը
ընտիր անձանց կըյայտնէր թէ մէկ Աստու-
ած միայն կայ, եւ բազմաստուածութեան
խուարին մէջ լուսոյ ճառագայթ մը կըծա-

գեցընէր: Բայց այն իմաստասիրութեան
դասերը խիստ ամփոփ սահմանի մը մէջ
կրնային լսուիլ. իսկ հիմա, զոհութիւն Աս-
տուծոյ, ժամանակները փոխուեցան, բար-
բարոսական օրենքները ջնջուեցան, եւ թէ
որ մէկ քանի ողբալի բացառութիւններուն
չնայինք՝ մարդիկ ամենքն ալ ազատ են,
եւ օր օրուան վրայ կըտեսնեն որ իրենց
շղթաներուն վերջին մնացորդներն անգամ
կըմաշին կըփառանան: Հասարակ ժողո-
վրդեան ազատութիւնը կըպահանջէ որ
բարոյական կըբութիւնը ամեն աստիճանի
խելքերուն ալ տրուի, ամենուն սրտին մէջ
ալ բափանցէ ու տոզորուի. իսկ հերանո-
սաց իմաստունները ոչ երբէք հասկըցեր
եին թէ ինչ հնարք քանեցընելու է՝ մարդ-
կանց շատը մէկտեղ կըբելու համար: Հին
իմաստասիրաց քանեցուցած լծակը՝ որ ես
շատ հաստատուն քան մը կըկարծեի, վեր-
ցընելու քեռան ծանրութեանը տակ ճկե-
ցաւ ու ծոեցաւ, եւ ես տեսայ ու ապշեցայ:

Ի՞նչ քանի կուզար մեր օրերուն բարոյ-
ական ուսումը՝ թէ որ քանի մը հոգի միայն

ըստին անիկայ հասկըցողները, եւ զրեքէ
բոլոր մարդկային ընկերութիւնը տղիտու-
թեան ու քշուառութեան մէջ մնար: Ուստի
մինչեւ ան ատեն չճանչցուած կարօտու-
թեանց համար նոր դարմաններ հարկաւոր
էին:

Քրիստոսի եղբայրսիրական կրօնին
ուժովը մարդկային ազգի ազատութիւնը
հոգակուելուն պէս, իր առաքեալներն
ու աշակերտները իրենց վարդապետին
խրատները ուղիօրէն ծաւայեցին բոլոր
աշխարհիս երեսը, եւ քրիստոնեութիւնը
նոր դարագլուխ մը եղաւ: Կրօնական ուս-
ման առջեւ բարոյական իմաստասիրու-
թեան ուսումը՝ որ արդեն օրէ օր իր յարգն
ու մեծութիւնը կորսընցուցեր եր՝ ոչնչա-
ցաւ. եւ բեկալու տեղ տեղ դասախոսու-
թիւններ կը լլային այլ եւ այլ կարծիքներու
վրայ, բայց այնպիսի դպրոց մը չմնաց որ
մէջը աշխատուեր մարդկանց բարքն ու
բնաւորութիւնը կը բեկու:

Ի՞նչ սոսկալի ոյժ է նախապաշտմանց

ոյժը : Ասոնք այնպիսի յայտնի բաներ եին
ինծի համար որ պէտք էր ազգիս տոջեւեն
քողը մեկէն վար ձգեին . Եւ սակայն ամըշ-
նալով հանդերձ կըսեմ որ այս բաներս զիս
շփոքեցին : Քրիստոնեութենէն այնչափ
կանուխ բաժնուեր իի որ իմ հաւատոյ դէմ
ունեցած կարծիքս մոլորութեան մը պէս
հաստատուած էր մտքիս մէջ , այն մոլորու-
թեանց պէս որ տղալութեան տոենէն որ
տեղիք ընեն՝ երկար ատեն իրենց ոյժը կը-
պահին : Միտքս չեի դրած ամենեւին , ոչ եր-
րեք ալ պիտի դնեմ միտքս , թէ սոութիւնը
կարող է օգուտ մը ընել ճշմարտութեան .
ճշմարտութիւնը յաջողութիւն գտնելու
համար իրեն պէս անարատ հնարքներ կու-
զէ : Ո՞ր խելացի մարդուն կրնաս հաւանե-
ցընել թէ անժամանակն Աստուած ինք-
զինքը պաշտպանելու համար կարու է մե-
զի որ խարեւութեամբ օգնենք իրեն : Այս
իրաւացի սկզբունքներէն ես սուտ հետեւ-
անքներ կըհանեի : Ո՞ր կրօնն որ իր կրւա-
կիցներուն խօսքին նայելով յայտնեալ կրօն
կըսուէր՝ իմառջեւս այլանդակ կրօնէր . ին-
ծի համար մեկիատիկ ճշմարիտ կրօն՝ բնա-

կան օրենքն եր՝ յայտնապէս Աստուծմէ
բխած. ուստի կուզէի որ անկէ ջրաժնուիմ,
եւ մէջը առասպելներ խառնելով շապակա-
նեմ անոր մաքրութիւնը։ Այս ճամբուս մէջ
երկար ատեն մեծ վստահութեամբ քայեցի.
Եւ մինչեւ հիմա ստորագրած բաներուս դէ-
տողութիւններն ընելէս ետեւուրիշ ճամբայ
չէի տեսներ առջեւս. այնպէս երեւցաւ ին-
ծի որ անել անծայր լաբիւրինքոսի մը մէջ
մոլորական կըպարախիմ։ Բոլոր սրտանց
կըփափաքէի որ մարդիկ երջանիկ ըլլան.
Ինչ օգուտ կըքաղէի իմ այնչափ քննու-
թիւններէս. բարոյական ուսում տարա-
ծել ուզողները ինչ օգնութիւններ կըզբա-
նէին։ Ապիկար Փիլիսոփայութիւն, սուտ
կրօն մը. ինծի այնպէս երեւցաւ որ աս-
տուածային Նախախնամութիւնը երկիրս
երեսէ ձգեր է։

Գիտէի որ իրենք զիրենք իմաստնոյ տեղ
դրած խելացիները կըկարծէին թէ ինծի
անլուծանելի երեւցած խնդիրը իրենք շատ
դիւրաւ կըլուծեն. Վասն զի այս կերպով
կը կտրէին խօսքը. « Փիլիսոփայութիւնը

զիտուններուն տուր, կրօնը ժողովրդեան
առջեւը նետէ: » Այս իրենց զրուցուածքին
աներեսութիւնը մեկդի ալ հանելով՝ իրենց
կարծիքը միայն բաւական էր զիս զգուե-
ցընելու: Վասն զի այս կարծեաց հիմն անէ:
թէ զմարդիկ կառավարելու համար՝ պետք
է խարել զիրենք. զարշելի սկզբունք՝
որ իմ ականջիս հայիոյանքի մը պէս կու-
գայ: Թէ որ ճշմարիտ ալ համարեինք այս
սկզբունքը, կարելի չէ մեր օրերուն մեջ
այնպիսի բաժանմունք մը ընել որ անով
մարդկանց մեծ մասը պիտի դատապար-
տուին մոլորութեան մեջ մնալու: Մարդ-
կային ընկերութեան ամեն մեկ մասն այ-
ուրիշներէն լսուելու չափ բարձր ձայնով
կըխօսի. նոր նոր մտածութիւնները ետեւէ
ետեւ կըպտըտին ու ամեն տեղ կըմտնին:
Թէ որ կրօնը ծաւալել ուզես, ամեն բանէ
առաջ հարկ է որ իշխանութիւն ունեցող-
ները, հարուստները, կրթուած մարդիկ
պատիւ ընեն կրօնին. եւ սակայն անոնց
տուած օրինակին այ մեծ ոյժ մը ունինալը
տարակուսական է: Սույզ բան մը կայ նէ
աս է որ անոնք անկրօնութիւն ծախսել ուզ

զեն նէ՛ իրենցմէ վար զտնուողները մէկէն
ի մէկ կըջանան անոնց հաւասարիլ, եւ
անոնց պէս կըսկսին նախապաշարմունք
ըսածնին արհամարհել :

Իմաստակներէն ոմանք ճոքերնին ղը-
րած են թէ մեծ տարբերութիւն կայասերկու-
րանիս մէջ. զմարդիկ խարել՝ զիրենք դէալ
ի բարին առաջնորդելու համար, եւ խարել
զիրենք՝ անձնական շահու համար : Այս-
պիսի բարոյականի մը հաւանութիւն տր-
տողը՝ շատ վտանգաւոր ճամքու մէջ կիյ-
նայ. անով կեղծաւորութեան կըվարժի
մարդ. եւ վախեմ թէ մարդկանց օգտակար
ըլլամ ըսելով սուտ խօսիլ սկսողը՝ վերջը
վերջը իր շահուն համար կըխարէ զանոնք :

Քանի կերրար իմ վիճակս անտանելի
կըլլար: Զիս չարչարողը սկեպտիկեան
երկրայութիւնը չէր. ամենեւին երկրայիւ
չունեի. ընդ հակառակն, բացարձակ ու
յայտնի կերպով կըսէի թէ մարդկանց վի-
ճակը լաւ ցընելու համար որչափ հնարքներ
որ կան՝ ամենն ալ տկար ու փուձ հնարք

ներ են։ Այս երկու սկզբունքը՝ թէ « իմաստասիրութիւնն անկարող է, կրօնը սուրան է, » անդադար աջքիս առցելն էին, եւ վերջինյուսահատութեան մեջ կը ձգեին զիս։ Քիչ մը ատեն փորձեցի որ ալ չմտմըսամ աս բանիս վրայ, եւ ատեն եղաւ որ ուրախացայ թէ փափաքիս կը հասնիմ. բայց սովորութիւնը յաղքեց ինծի, եւ միտք զրադեցընել ուզելով՝ բան մը փնտուեցի որ վրան դիտողութիւններ ընեմ։ Դեռ նորհասկըցեր եի թէ քրիստոնեութիւնը փիլիսոփայութենեն շատ աւելի զօրաւոր է զմարդիկ կառավարելու համար։ Հետաքրքրութիւնս եկաւ որ քննեմ տեսնեմ թէ այս զերազանցութեան պատճառն ինչ է. եւ միտքս դրի որ այս քննութեան ատեն ամենայն ձշդութիւնն եւ կատարեալ անկողմնասիրութիւն ունենամ։ Եւ որովհետեւ արդեն վարժած եի աս բանիս, առաջադրութիւնս կատարելու համար դժուարութիւն չքաշեցի։ Թող որ խնդիրն ալ ինչ եր. կուգեի որ պարզապես հասկընամ թէ ինչ պատճառներէ առաջ կուգայ այն բանն որ յայնապէս կրտեսնէի թէ կայ։ Որ եւ իցէ կրօն

Երբոք խոհական պատուիրանքներ որպեսը է, եւ մեծամեծ հնարքներ ունենայ՝ ամեն տեղ տարածուելու համար, զարմանալի կը լոյայ ամենուն. բայց թէ որ նոյն կրօնը սուս կրօն է, կարհամարհուի ու մեկդի կը ձգուի:

Ուղիղ բարոյականին ինչ օգնութիւններ որ կը նեն իմաստասիրութիւնն ու կրօնը՝ ես այն օգնութիւնները իրարու հետ համեմատելու համար մասնաւոր ոճ մը որոշած չեի: Աս իմ գրածս այ զիրք մը եւ կանոնաւոր ճառ մը չէ. հապա կուզեմ իմ ըրած գլխաւոր դիտողութիւններս միայն՝ որչափ որ միտքս կուզան՝ զիր անցընել:

Քրիստոնեութեան մարդուս սրտին վրայ տիրապետելուն առաջին պատճառն յայտնի է: Իմաստասիրութեան տուածները մեյմեկ խրատներ են միայն, եւ մարդս միշտ կրնայ ուրիշ մարդու մը տուած պատճառին դիմացը ուրիշ պատճառ մը հանել. իսկ կրօնին տուածները պատուիրանքներ են՝ որ Յաւիտենականին Աստո-

ծոյ անուամբը կը հրատարակէ: Կրնայ ըլլալ որ այն պատուիրանաց ծագումը մուր եւ անստոյգ ըլլայ, եւ զօրութիւնը շատ մեծ. Երբոր կրօնի մը հետեւողները հաստատուն կերպով մտքերնին դրած են թէ այն կրօնը ճշմարիտ է, իրենց հաւատը քեզէտ եւ մոլորական ըլլայ՝ ճշմարիտ եւ ուղիղ հաւատոյ արգասիքը եւ զօրութիւնը կունենայ: Այս իրական ճշմարտոքեան միտքս հաւանեցաւ, բայց միանգամայն այս պայմանն այ դրի թէ մտաւորական խարեւոթիւնը ոչ երբեք անխախտելի նիմն կրնայ ըլլալ:

«Քրիստոնեական կրօնին զօրաւորութեանը մեծ պատճառ մըն է կարծութիւն թէ այս կրօնը Աստուծմէ եկած է. բայց ուրիշ պատճառներ այ կան, եւ անոնց մեջ ամենեն երեւելին իր բարոյականին անհամեմատ իմաստութիւնն է: Այս կրօնին նոյն իսկ իր հակառակորդներէն ընդունած մեծարանքը այնչափ յայտնի է որ եկեղեցականաստիճանաւոր մը կրցաւ ըսել. «Քրիստոնեութեան բարոյականին նպաստա-

որ վկայութիւններուն ամենևն զօրաւոր-
ները անհաւատներուն թիրնեն կըլու-
ին ⁴: »

Կարդացի աւետարանը այնպիսի ու շա-
ռըութեամբ որ մինչեւ անտենը չէի ունե-
ցած, եւ այնպիսի զգացմունքներ ունեցայ
որ իրարմէ շատ տարբեր էին: Այն աստ-
ուածային բարոյականեն սիրոս կըզորո-
վէր ու միտքս կըզմայլէր. բայց անոր մէջ
խոտնուած խորհրդաւոր զաղափարները
այնպիսի ազդեցութիւններ կընեին վրաս
որ հաւատացելոց վրայ ըրածներուն բոլո-
րովին ներհակ էին: Քանի քանի անզամ
վար որի զիրքը՝ մէյմալ ձեռքս չառնելու
մըտքով. եւ սակայն անոր անարատ բա-
րոյականին, վսեմ սրատուիրանքներուն,
անպաճոյժ զրուցուածքին զմայլած՝ նորէն
կրտնեկի կըկարդայի: Յիսուս ամենեւին
ճարտասան մարդու չնմանիր. ուստի
քրիստոնեութեանտարածուածատենները

⁴ Կարդինալ Տըլս Լիւ Էնն. Գերազանցութիւն Կրօնի:

շատ Փիլիսոփաներ ըսին թէ առեւարանին զրոցուածքը զարդարուն չէ: Այն անման զրոցուածքը, այն առակներն որ ենեւ ետեւ Յիսուսի խօսքերուն մէջ կուգան, այնպիսի համարներ են մեզի որ իրենց քաղցր ու պատկանելի իմաստութիւնը չափ չունի: Հրեայք անզամ կըսէին զարմանալով. « Ոչ երբեք խօսեցաւ մարդ իբրեւ զայրն զայն: »

Այնպիսի կատարելութիւններ ունի Քրիստոս որ մարդ կանց վրայ իրարուներնակ բաներ կերեւնան: Կըտեսնես որ խոնարհ է սրտիւ. Եւ իրեն խոնարհութեանը վրայ ամենեւին այլայլութիւն մը չիզար մտքիդ՝ մէջ՝ երբոր կըսէս իրեն ըսելը թէ « Երկինք եւ երկիր անցցեն եւ քանը իմ մի անցցեն: »

Իր բարոյականը լսելով կըզմայլէի, այնպիսի անձի մը բերնեն լսելով որ իր վարուց օրինակները բոլորովին համաձայն են վարդապետութեանը: Ամեն ժամանակ

բարիք կըզործէ Յիսուս. կըթշկէ, կըմը
խիրարէ, կըլուսաւորէ: Այն ինչ անձնա-
նուեր սկը է որ ունի մարդկանց վրայ: Այն
ինչ բացայաց գիտութիւն է որ ունի իր
քաշելու շարչարանացը և ընելու յաղթա-
նակին վրայ: Ո՞ր վարքը կայ որ իր վար-
քէն աւելի անարատ ըլլայ. ո՞ր մահը կայ
որ իր մահուրնեն զերազանց ու վեճմ
ըլլայ:

Աւետարանի բարոյականին վրայ ձիշդ
զաղափարներ կըստանայի, բայց անկէց
անդին առաջ չեի երթար: Մեկ իրիկուն մը
աւետարանին մէջ զրուած Քրիստոսի մա-
հուան սրտաշարժ պատմութիւնները կար-
դալով սիրտս լեցուեր էր. մեկը եկաւ
տունս՝ որ իրեն անհաւանութեանը մէջ
շատ հաստատուն էր. տեսաւ որ սիրտս
լեցուն է, հարցուց թէ ինչ է պատճառը:
Չուզեցի ծածկել, շտկէ շիտակ զրուցեցի.
անիկայ կատակի զարկաւ: Ես այ քու
կարծիքեղ եմ, ըսի իրեն, և կըսեմ թէ Աս-
տուած մեր նախնեացը երեւցած չունի.
բայց թէ որ անոնց երեւցած ու հետերնին

խօսած ըլլար, հաստատ դրած եմ միտքս
որ անոնց լսած խրատներն այ Քրիստոսի
տուած խրատները պիտի ըլլային։ Եթ
պատուիրանն ասէ. «Սիրեցէք զԱստուած
եւ զմարդիկ.» միք ասկէց աւելի հիմնա-
կան խրատի լոյս ունիս։ Բովանդակ օրէնք-
ները այս խօսքերուս մեջ են. այս խօսքերս
ի բարոյական կարգի նոյն զօրութիւնն
ունին՝ ինչ որ ի բնական կարգի ունեցաւ
«Եղիցի լոյս» խօսքը։ Ժպտեցաւ հիւրս եւ
ուրախակից եղաւ ինձի որ դարձի եկեր եմ։
Ո՞հ, ըսի ես իրեն. ինչ զերմեռանդու-
րեամբ քրիստոնեայ կըլլայի ես՝ քէ որ կա-
րելի ըլլար քրիստոնեայ ըլլայ առանց հա-
ւատոյ վարդապետութիւններն ընդունե-
լու, եւ առանց աղօքքէն զատ ուրիշ բարե-
պաշտական կըրթութիւններ ընելու։

Դատ անգամ կրտեսնեի ու կըզարմա-
նայի որ ծանր ծանր խնդիրներու մեջ
աւելի լուսաւոր միտք ունին խոնարհա-
միտ քրիստոնեաները քանքէ զատ անուա-
նի Փիլիստիաներ։ Ամօքայի բան չէ որ
իմաստուն մարդիկ գիշեր ցորեկ մտմտան

թէ ինչպէս զտնեն այն բանն որ շատոնց
զտնուած է: Օրինակի համար, վեճ կը նեն
իմաստաւոքը որ հասկընան թէ մարդու
վախճանն ինչ է այս աշխարհիս վրայ. բա-
րակ բարակիսնդիրներու մեջ կը մտնեն, լե-
զու կը բափիեն, կը կանչու ըոտեն, մինչդեռ
անդին բարեմիտ քրիստոնեայ կնիկ մարդ
մը կը նայ եղել ու ըսել իրենց. « Աստուած
զմեզ անոր համար ստեղծեր է որ զինքը
սիրենք, պաշտենք, եւ օր մը իրեն երանու-
րեանը մասնակից ըլլանք: Այս աշխարհո
մեզի համար նեղութիւն ու փորձանք քա-
շելու և մեր վրայ դրուած պարտքերը կա-
տարելու տեղ մի է. եւ այս պարտքերը կա-
տարելը կամ զանց ընելը մեր ձեռքն է: Այս
անցաւոր կեանքէս ետեւ, թէ որ մենք մեր
Հօրը կամացը հնագանդ զտնուերենք՝ զմեզ
կը վարձատրէ, վասն զի ամենաբարի է. թէ
որ իր կամացը դեմ կեցած ենք՝ կը պատժէ
զմեզ, վասն զի արդար է: » Նոյն նիւթին
վրայ խօսելու ատեն՝ թէ որ Փիլիսոփայք
այս խօսքերս աւելի պարզելով միայն զոհ
ըլլան, զիտցած ճշմարտութիւննիս ալ
պիտի մոռցընեն մեզի:

Ամենայն աստուածեանք այ կըվկայեն
թէ անաստուածութիւնը անձոռնի մոլո-
րութիւն մի և. բայց իրենց տզիտութեանը
պատճառաւ որչափ բաներու մէջ իրարու
ներհակ կարծիքներ ունին : Ոմանց ըստին
նայելով, Աստուած նիւրոյն արարիցն և.
ուրիշներուն նայելով, նիւրոյն մարտա-
րապետն է միայն. Չատն այ աշխարհիս
երեսը զտնուած քշուառութեանց պատ-
ճառ չեն համարիր զինքը, վասն զի՞ կը-
սեն՝ ըմբոստ նիւրի մը վրայ աշխատելով,
ասկէց լաւ ընել չկրցաւ : Աստուածեաններ
կան որ հոգւոյ անմահութեանը չեն հաւ-
տար : Թուսոյին կարծիքն այս է թէ մար-
մնոյն մեռնելէն ետքն այ հոգին կապրի,
զէր այնչափ ժամանակ որ երկրիս վրայ
առաքինութիւնը հալածող անիրաւութեան
ձգած խոռվութիւնը վերջանայ. բայց չզի-
տեր որ հոգին իր բնութեամբը անմահ է թէ
չէ : Քանըին մեռնելէն քանի մը օր առաջ՝
բարեկամներէն մէկը հարցուցեր է իրեն թէ
հանդերձեալ կենաց վրայ իր կարծիքն ինչ
է. Քանը սկեպտիկեան փիլիսոփայի մը
պէս տուեր է պատասխանը :

Եւ սակալն կրնանք ըսել քէ աստուածեանք օրէ օր աւելի ճիշդ գաղափարներ կըստանան Աստուծոյ ստորոգելեաց (այս ինքն կատարելութեանցը) վրայ, ինչպէս են կարողութիւն, իմաստութիւն, արդարութիւն, բարութիւն, գրութիւն։ Բայց այս ճշմարտութեանց բովանդակութիւնը իմաստասիրութեան պտուղը չէ. իմաստասիրութիւնը այս բաներս սորված է քրիստոնեութեանէն՝ որ Երկրիս վրայ Աստուծոյ մեծութեանը եւ մարդուս Երջանկութեանը յարմար այնչափ գաղափարներ տարածեր է, եւ անոր լոյսը քիչ շատ կըրափանցէ նոյն խոկ իր խառնախոս թշնամեաց գրուածքներուն մէջ։

Երբոր մեկիկ մեկիկ քննել սկսայ այն պատճառաբանութիւններն որ կըսան սովորաբար՝ բնական օրինաց մարդուս բաւական ըլլալը ցուցընելու համար, տեսայ որ շատ տկար են։ Այն օրենքը, եւ մարդուս խղճմտանքը որ նոյն օրենքը պահել տալու կաշխատի իր խրատներովը, հրամաններովն ու յանդիմանութիւններովը,

Արարջին անհուն բարիքներն են : Աստու-
ծոյ գոյութեան մեկ ապացոյցը (այնպիսի
ապացոյց մը որ ուրիշ ապացոյց փնտու-
լու ամեննեւին կարօտ չըներ զիս) այս է որ
աշխարհս տոաջ կերրայ, թէպէս եւ մար-
դիկ ամենայն ջանք կընեն որ արզիկեն :
Աստուած ուզեր է որ իր գործը մնայ. ուս-
տի գրութեան բնական ազդմունքը եւ ար-
դարութեան գաղափարներ դրեր է մեր
բնութեան մեջ որ ձեռքերնիս չէ մոռնալը,
եւ ոչ բոլորովին խղղելն ու փճացընելը :
Թէ քրիստոնեայք եւ թէ աստուածեանք
կընաւատան որ բնական օրէնքը աստուա-
ծային օրէնք մի է. աստուածեանք կըսեն
թէ բնական օրէնքէն զատ յայտնութիւն
չկայ, իսկ քրիստոնեայք կըսեն թէ բնա-
կան օրէնքը առաջին յայտնութիւնն է :
« Զարմանալի բան է որ անկեց ի զատ
ուրիշ յայտնութիւն այ հարկաւոր ըլլայ »
ըստ Մուսոյ : Յիրաւի այ զարմանալի բան
կըլլար՝ թէ որ այն ուրիշ ըստածը զառա-
ջինը փճացըներ, եւ տեղը անոր հակառակ
յայտնութիւն մը բերեր : Սակայն առաջինը
այնպէս անխախտելի կըմնայ որ եթէ մո-

լենախանձ մարդիկ իբրև երկնքեն խըր-
կուած զային ու մեզի չարազործութիւն
ընել հրամայէին, զիրենք խայտառակելու
համար բաւական էր բնական օրենքը առ-
ջեւնին հանել. Վասն զի կարելի բան չէ որ
Աստուած ինքն իր խօսքին հակառակը
ըսկ :

Աւելորդ աշխատութիւն է զանայ հաս-
տատել թէ որչափ պատուական բաներ
են բնական օրինաց մեզի ըրած օգնու-
թիւնները. ամէն խելացի մարդ այ կըհաս-
կընայ անոնց հարկաւորութիւնը : Բայց
մէկը չելք քրիստոնէութեան դեմ չխօսի՝
միտքը դնելով թէ անիկայ մեզմէ այս օգ-
նութիւնները վերցընել կուզէ : Վասն զի
քրիստոնէութեամբ բնական օրենքը կը-
պահուի, կըհաստատուի, կամբողջանայ
ու աւելի դիւրաւ կըհասկըցուի. քրիստո-
նէութեամբ մարդուս խղճմտանքը կըզօ-
րանայ, ունեցածնիս քովերնիս կը մնայ,
եւ աղէկութիւն աղէկութեան վրայ կըզը-
նենք :

Մեկ գիտնալու խնդիր մը կայ նէ այս է
թէ արդեօք քրիստոնեութեան տուած օգ-
նութիւններն այ՝ մեկայներուն պէս հարկա-
ւոր են, եւ մարդկային ազգը պարտական
է արդեօք անոնց համար երախտագէտ
ըլլալու: Ինչպէս որ ճշմարիտ է թէ ընա-
կան օրէնքն ու մարդուս խղճմտանքը մե-
ծամեծ օգուտներ ունին, նոյնապէս այստոյզ
է թէ տղիսութիւնը, նախապաշարմունք-
ները, կիրքերը, մոլութիւնները կրնան
ընական օրէնքը մրնցընել եւ մարդուս
խիղճը մոլորցընել: Այն մարդն որ տղայ-
ութեան հասակէն ի վեր վարժած է տես-
նելու գերութեան մէջ ընկած մարդիկ, սե-
ղաններու վրայ զոհ եղած մորբուած մար-
դիկ, միքէ կրնայ դիւրաւ կարդալիր սըր-
տին մէջ այն օրէնքն որ կապսպէ՛ իրեն
նմանները սիրել: Մեր մէջ անգամ, մեկ
տղայ մը որ անունով միայն գերդաստան
ըսուած խառնաղանձներէն մէկուն մէջ ան-
դադար ցոփութեան ու զողութեան օրի-
նակներ կըտեսնէ, ու ետքը իր որչէն դա-
տարկապորտ կեանք մը անցընելու կելլէ
եւ մեկ փոսէն մեկալը կըզլորի որ չարա-

գործութեան կրրութեանը մեջ կատարելազործուի, այնպիսի քշուառ տղան միքէ իր խղճմտանքին մեջ այնչափ լոյս կըգրտնէ որ իր զորս դին ու սրտին մեջ եղած մրութիւնը կարենայ փարաւել: Թէպէտ եւ նոյնչափ սոսկալի չըլլայ՝ բայց շատ ցաւալի է նաեւ այն մարդկանց վիճակնորիրենց չքաւորութեանը եւիրենց ընտանեաց կարօտութեանը պատճառաւ պարտական են անդադար ծանր աշխատանքներով ապրելու. այնպիսիները մեքենայի պէս կապրին. միայն ներկան մտածելով՝ ապազային համար ոչ նախատեսութիւն ունին եւ ոչ ակնկալութիւն, եւ շատ անզամ իրենց քշուառութեան չափը կանցընեն զանազան մոլութիւններով: Միիթարական ձայն մը պէտք էր որ անոնց սրտին մեջ լաւ զգացմունքներն արքնցընէ, անատեն վիճակնին այ կըլաւնար. թէ որ գինովութենէն զատուրիշ զրուանք ունենային, թէ որ հանգստեան օրերը հանգչէին, թէ որ կանուխկեկ սորմեցընող ըլլար իրենց թէ նրչափ ոյժ կուտան մարդուս այն կարճ աղօքքներն որ ամեն տեսակ աշխատու-

թեանեւ ամենայն վշտաց հետ կրնան միա-
բանիլ ⁴:

Այն պատանին որ երեսի վրայ ձգուած
է աշխարհի մեջ, ինչպէս կրնայ ազատ
մնալ իր չորս դիմ պատած մոլորութիւններէն՝ քէ որ իր անփորձութեանն ու ցնդեալ
խղճին իրեն տուած խորհուրդներէն ի
զատ ուրիշ խրատ չլսէ: Միայն մտածել
տալու համար անգամ իրեն՝ զօրաւոր օգ-
նութիւններ հարկաւոր են:

Այնչափ տկար ենք մենք որ նոյն խկ

* Յևին աստիճանի աղքատութիւնը աղքիւր է ամ-
բարշտութեան: Բացարձակ հարկաւորութեամբ հար-
կաւոր եղած քաներէն զուրկ մարդկանց հետ խօսք բաց
Աստուծոյ վրայ. շատ անգամ սարսափելի պատաս-
խաններ կը լսես իրենցմէ. զոր օրինակ. « Թէ որ Աս-
տուած մը ըլլար եկ՝ այսչափ թշուառութիւն չէր ըլլար
աշխարհիս երեար: » — « Աստուած, ես այ իրեն պէս կը-
նեմ. ինքը զիս չմտնիրտար, ես այ զինքը չեմ մտմտար: »
Երբոր քարերար անձինք որ իրենց քսակովն ու խրատ-
ներովը այն խեղճերուն օգնութիւն կը նեն, վերջապէս
կրյաջողին յետին թշուառութենէն դուրս հանելու գա-
նոնք, այն ողորմելեաց սիրոր յոյս կը ծագի, եւ աշ-
քերնին դեմ ի երկինք գալուայ կը սկսի:

քրիստոնեութեան մէջ այ զանուելով՝
խիստ շատ անկարգութիւններ ունինք: Եւ
սակայն կուզենք իմանալ թէ քրիստոնեու-
թիւնը շատ աւելի զօրաւոր է քան թէ մի-
նակ բնական օրէնքը. բաւական է որ մեյ-
մընայինք թէ քրիստոնեութեան քարոզուե-
լին առաջ աշխարհս ինչ վիճակի մէջ էր:
Այն որչափ գերութեան եւ անսանձ ազա-
տութեան ցաւալի օրինակներ կային որ
վերցուեցան աշխարհէս: Ո՞րչափ մոլու-
թիւններ, չարազործութիւններ կային որ
հիմա մենք լիշելու անզամ կըպժգանք, եւ
այն ատենները ոչ կըդատապարտուեին
եւ ոչ զարմանք կըպսումառէին: Ո՞րչափ
առաքինութիւններ զբուեցան մաքրուե-
ցան եւ աւելի գործունեութիւն մը առին:
Ո՞րչափ արցունքներ սրբուեցան՝ քրիստո-
նեական եղբայրութեան ձեռքովը: Թէ
որ չուզենք մանչնալ այն մեծամեծ աղե-
կութիւններն որ ի գործ զբուեցան օրի-
նաց՝ վարուց եւ սովորութեանց մէջ, մեծ
անիրաւութիւն կընենք. ընդ հակառակն,
երախտազետ սրտով հոգակենք թէ աշ-
խարհիս վրայ եղած ամեն աղեկ փոփո-

խուրիւններուն այ պատճառ քրիստոնէութիւնն է:

Քրիստոնէութեան ուժին վրայ զարմացած, եւ աղեկուրիւններուն զմալլած, եւ կըհարցընեի թէ արդեօք անոր պտուղներէն միայն չենք կրնար դատաստան ընել վրան, եւ անոր մարդկային ազգիս ըրած օգուտները արդեօք իր ճշմարիտ ըլլալուն մեյմէկ անժխտելի ապացուցներ պկուք չեն սեպուին: Կըսէի նաև ինքիրենս. մարդուս անձնասիրութիւնը շատ անզամամենածանը նիւթերու վրայ շատ թեթեւութեամբ խօսիլ կուտայ, այնպէս որ շուտ մը կըվճռենք թէ այս եւ այն օգնութիւնները բաւական են, մեկալները աւելորդ: Մըտքերնիս կըդնենք թէ մեր նաւնած օգնութիւնները բաւական ոյժ կուտան մեզի. նուաստութիւն կըհամարինք նոր նպաստներու կարօտ ըլլալը: Աստուծոյ անբաւ կարողութեանը վրայ տարակոյս կըհանենք, եւ իրարու հետ կըվիճենք թէ արդեօք Աստուծ ինչ նպաստներ կընայ ընել մեզի:

Հարկ չեմ սեպեր մեկիկ մեկիկ մեջ քերել մտքիս ալեկոծութիւնները. սրտիս մեջ իրարու հակառակ խորհուրդներ կը ծագեին, մեկմեկու դեմ կը կռուէին, ու մեյմը մեկէն կը յաղըուէի՝ մեյմը մեկայէն։ Սրտիս զգացմունքը զիս աւետարանի հաւատքին կը քաշէր. բայց միտքս այն կտորին երբալուն պէս որ ես դեռ տակարանութիւն քրիստոնէութեան կանուանէի, նախապաշարմունքներս նորէն ոյժ կառնէին, եւ ինծի այնպէս կերեւար թէ խելքս զլուխս ժողվեցի։ Վրան քիչ մը կանցնէր, դարձեալ կը տագնապէի, ու բոլոր սրտանց ափսոսալով կը սէի. Մեղք որ այս կրօնին հիմունքը առասպելսխառն են։

Քանի որ դիտողութիւններս ձեռքէ չեի ձգեր, քրիստոնէութեան զերազանց օգուտներուն վրայ աւելի կապշէի կը զարմանայի։ Արդէն զիտէի թէ Փիլիսոփայութիւնը մարդկանց բազմաթիւ մասին վրայ ոյժ չունի. տեսայ որ կրօնական օգնութիւնը աւելի ալ հարկաւոր է անոնց որ մտքերնին կը բռուած է, եւ իրենք հարստու-

թեան տէր կամ հանգիստ ապրող մարդիկ են, վասն զի այսպիսեաց պարտքերն այ աւելի բազմաթիւ են եւ աւելի դժուար, եւ ասոնց պարտականութիւնն է՝ մեկակներուն վրայ այ ազդեցութիւն ընել օգտակար կերպով։

Դատ մարդիկ կը ճանչնայի որ՝ անդադար կը մտածէին ու կաշխատէին հնարքներ զտնելու որ բջուառութիւնն ու աղքատութիւնը պակսեցընեն եւ անոնց առջեւն առնեն։ Այն խոհեմ մարդիկը շատ անգամ կը ունի թէ մարդկային ազգը իրաւցընկերջանիկ ընելու համար՝ պէտք է երկու կարգի մարդիկն իրարու հետ կապել երկու տեսակ կապով, այս ինքն բարերարութեամբ ու երախտազիտութեամբ։ Դատին աջքին առջեւը այս հիմնական ճրշմարտութիւնը եղջերուաքաղի պէս շինծու մտածութիւն մը կը սեպուէր. շիտակն ուզեկին հասկընալ նէ՛ պիտի ըստին թէ քրիստոնեական մտածութիւն է ասիկայ։ Այսօրուան օրս իմաստուն մարդիկ մտքերնին դրեր են որ այս մտածութիւնն ի գործ դը-

նեն¹ : Խիստ մեծ համարմամբ կը նայիմ և
այն մարդկանց շատին վրայ որ իրենց
միտքն ու ջանքը այս նպատակիս հասնե-
լու կը բանկեցրնեն. անով օգնութիւն ընելու
ճամբաներն ու անոնց զործադրութիւնը
կը կատարելագործուին : Ամեն մարդ զիտէ
որ բարեգործութիւն ընողը՝ խեղճի մը օգ-
նութիւն ընելէն ետե՛ պիտի սորվեցընէ
անոր քէ ինքն իրեն ինչ կերպով պիտի օգ-
նէ. ամեն մարդ զիտէ քէ աղքատին ընա-
կարանը պէտք է առողջարար ընել, եւ քէ
անոր տրուելու պարզեներուն ամենէ
պատուականներն են նախատեսութիւն եւ

¹ Այս գրքոյիս փետրուարի յեղափոխութենէն առաջ
գրուած լմբնցած էր : Հիմա կուզուի որ Տէրութիւնը
աւելի գործունեայ կերպով մտածէ՝ հնարքներ գտնէ՝
աղքատաց խեղճութիւնները պակսեցընելու համար, եւ
կարծեմ քէ մտացածին դրութիւնները մեկդի դնելով,
այս դիտաւորութիւնը կը նայ առեկ հետեւանքներ ունե-
նալ : Բայց նայինք որ այս այ չմոռնանք քէ միշտ հար-
կաւոր պիտի ըլլայ մասնաւորաց ու կամաւոր ընկերակ-
ցութեանց նպաստներուն մեկտեղ գործակից ըլլալը : Եթէ
միայն կառավարութեան ձեռքով եւ օրինաց ճամբովն
ուզեն վարուի, խեղճ մարդկանց վիճակը լաւցընելու
համար պէտք եղած խնամքն ու խրատները կը պակսե-
ցընեն, որով զմարդիկ իրարու հետ միացընելու հնարք-
ներուն ամենէն մեծն այ կը կորսընցընեն :

յարատեսութիւն՝ որ առանց ասոնց կարելի չէ քարի վարուց կանոններուն հետեւիլ։ Կը զմայիմ ես այն ձշմարիտ քարեսկը ու քարերար անձանց վրայ որ այս կերպովիրենց մերձաւորաց աղեկութեանը համար կաշխատին, եւ միանգամայն իրենք զիրենք կը դաւընեն։ բայց ուզեմ չուզեմ կը տարակուսիմ թէ արդեօք որչափ տան պիտի դիմանայ իրենց ջանքը։ Վասն զի քանի քանի արգելքներ կելլեն դիմացնին. որչափ հաստատութիւն մտաց պկուք և իրենց որ կարենան դիմանալ։ Քանի որ կը մտածեմ թէ դարեր պիտի անցնին որ այսպիսի աշխատանքները ինչպէս որ պկուք և յաջողին՝ թնջոկս չտագնապիմ։ Մարդս խիստ շուտ կը յոզնի. որչափ այ տաք սրտով առաջադրութիւններ ընէ, քիչ տանենէն կը մոռնայ զանոնք։ Ռւրեմն մեր տկարութեանը դէմ դարմաններ փնտուելու և. եւ ահա փորձառութիւններ կը ցուցընէ թէ մեկ այսպիսի դարման մը կայ։ Քրիստոնէական կրօնին ուժովը՝ քարեգործութիւն ըստածք կը դայ Սէր կամ Եղբայրաթիրութիւն, այսպիսի յստակ սէր մը

որ Երկնային աղբիւրէն կընդունի իր յոր-
դուրիւնն ու զօրուրիւնը : Քրիստոնեու-
թեան մէջ ամէն քան այնպէս կարգաւո-
րուած է որ այս սկըլ կը քարոզէ : Աստուած
ըն քրիստոնէից ըստ մարդկանց . Հայր
մեր անուաննեցէք զիս : Իրենց մէկ ընտա-
նիք՝ մէկ ազգատոհմ ըլլալը յաւ հասկըցը-
նելու համար , քոյոր մարդկային ազգին
նախածնող ըրաւ մէկ Երիկ մարդ եւ մէկ
կնիկ մարդ մը միայն : Աւետարանը լեցուն
է այնպիսի խրատներով , պատուիրաննե-
րով , օրինակներով որ կըստիպէն զմեզ
իրարու օգնելու . եւ Քրիստոս՝ ապաւէնն
տկարաց՝ մասնաւր կերպով սիրեց տը-
ղայքն ու աղքատները :

Չատ անգամ յսած եմ որ հարուստ մարդ-
կանց համար կըսուի թէ Սիրելիք քաղղին
են . եւ այս զրուցուածքը ճիշդ է , վասն զի
խիստ շատ նեղութիւններ կընայ թերեւցը-
նել : Պարապժամանակն ու հարստութիւնը
այնպիսի քաներ են որ մեծամեծ օգուտներ
կընան ընել՝ թէ որ խմասութեան կանոնով
գործածուին . քայց թէ որ այս կանոնս

պակսի, պարագ տտենը դիւրաւ կըձգէ
զմարդ դատարկութեան մոլուրիւններուն
մէջ, հարստուրիւնն ալ կրնայ անձնապաշ-
տուրեան յանցանքներու տանիլ:

Խիստ քիչ մարդ կայ որ ամեն տեսակ
հրապուրանաց դեմ կարենայ դիմանալ քա-
ջուրեամբ։ Թերեւս կարծուածէն աւելի
շատուր են անոնք որ մեծագումար սորկի
համար ալ յանձն չեն առնուր իրենց պարտ-
քը ոտքի տակ առնել։ սակայն այսպիսի
խոշոր հրապուրանքէ մը չփորձուող զատ
մարդիկ կան որ պատուոյ՝ պատուանունի՝
պատուանշաններու չեն դիմանար։ Այս
երկու տեսակ տկարութեան մէջ՝ մէկը մէ-
կայէն անարգ, մէկայն ալ առաջինէն ան-
միտ է։ Մարդ կայ որ երկուքին ալ կըյադ-
քէ հաւասար քաջուրեամբ, եւ սակայն
կնոջ մը ժպտելովը կամ նայուածքովը կը-
կախարդուի։ մարդ ալ կայ որ այս ամեն
փորձուրիւններէն իր պատուվը ազա-
տելէն ետեւ, կերրայ թերեւս ահազին անի-
րաւուրիւն մը կըգործէ՝ բարեկամի մը
խօսքէն չանցնելու համար։

Փիլիտփայութիւնն այ կապսպրէ որ
մարդս ինքիր վրայ արրուն կենայ, բայց
բաւական ծանր պարտք չղներ. յանցանք-
ները կըդատապարտէ, բայց ներողամիտ
է այն մտածութիւններուն ու բաղձանք-
ներուն համար որ անմիջապէս լինասա-
կար հետեւանքներ չունին: Կրօնը աւելի
կանխատես ըլլայով՝ կարգիլէ այնպիսի
բաղձանքները, որովհետեւ անոնցմով
մարդս կրնայ նաեւ գործադրութեանը մէջ
իյնայ. մտածութիւններն այ կարգիլէ,
վասն զի բաղձանքը մտածութենէն կը
ծնանի: Մարդս կըվախնայ ինքզինքը պար-
տաւորելու որ հոգ ունենայ վրան, կըվախ-
նայ որ չըլլայ թէ իր կեանքը կանոնաւո-
րելով դառնացընէ. սակայն ինքիր վրայ
արթուն կեցողը ինքզինքը երջանիկ կընէ.
վասն զի իր մտքին՝ բաղձանացն ու գոր-
ծոցը մէջ ներդաշնակութիւն մը դնելով՝
անոր քաղցրութիւնը կըվայելէ. այնպիսին
միայն է մարդ ըսուելու արժանի :

Որչափ որ դիտես՝ այնչափ աւելի կը-
տեսնէս որ յստակ բարոյական մը սովորե-

ցընելը բարյական չէ, ոյժ այ տալու է այն
բարոյականին հետեւելու: Դնենք թէ ընդ-
ունեցար որ այս ինչ սկզբունքը իրաւցը-
նէ խոհական սկզբունք է. բայց գործա-
դրութիւնն որ չես ըներ՝ զիտես ինչ կըհե-
տեւի. — յայտնի հակասութիւն, անդադար
մեղադրութիւն, անխորշելի դատապար-
տութիւն: Ո՞րչափ բարոյական վարդապե-
տութիւններ որ ունինք՝ անոնց մեջէն հաւ-
նածդ ընտրէ, եւ անոր պտուղները անա-
չառ կերպով քննէ, կըտեսնես որ խիստ
քիչ ոյժ ունի. խելքդ կըսըրէ, բայց սրտիդ
մեջ զքափանցեր: Երէ կան Փիլիսոփաներ
որ իրենց սիրած սկզբունքէն մեծամեծ
օգուտներ քաղելու պէս կերեւան՝ անոնք
են որ կարգէ դուրս բնական հաստատա-
մտութիւն մը ունենալով, իրենց անձնական
ոյժը այն սկզբունքին այ կըհադորդեն:
Կրօնը ինքը իր աշակերտաց ոյժ կուտայ.
իսկ մեր դրութիւնները՝ թէ որ մենք չըըն-
նենք՝ կըփմանան, եւ մենք այնչափ տկար
ենք որ այս կերպով մեծ օգուտ մը չենք
կրնար քաղել:

Մեկ դիտողութիւն մը ըրի որ շատ զարմացուց գիս : Թող աստուածեան մը առնու աւետարանին բարոյականք՝ իրեն վարուցը կանոն ընէ . նոյն խրատներն ու նոյն պատուիրաններն են իր աչքին առջեւ ինչ որ քրիստոնեայք այ կըկարդան , եւ սակայն իր կարդալուն եւ քրիստոնէից կարդալուն պտուղները շատ տարբեր կըլլան իրարմէ : Նիւրապէս մի եւ նոյն բարոյականն է, դարձեալ նոյն խոհական սկըզբունքն է . բայց քանի որ հաւատոյ վարդապետութիւններէն եւ աստուածավաշտութեան կրթութիւններէն զատուած է՝ իմաստափրաց խրատներէն աւելի ազդեցութիւն մը չունենար մարդուս սրտին վրայ : Քանի որ մինակ մնացած է՝ կենդանութիւն չունի, աստուածային փչում մը չկայ որ հոգի տայ անոր :

Ապա ուրեմն հաւատացելոց ունեցած օգուտն անբաւ է : Առանց կրօնէն օգնութիւն ընդունելու՝ բարոյական իմաստափրութիւնը ոչ երբէք կըտիրէ մարդկանց բազմութեանը վրայ . քանի որ այն օգնութե-

նեն զուրկ ենք՝ մեր կարծիքներն ալ հաստատութիւն չունին. այն կանոններն որ մանք մեր իշխանութեամբը միայն մեզի կըդնենք՝ շատ դիւրաւ մեկդի կըձգենք, կըփոփոխենք, ոտքի տակ կառնենք, երբեմն խեղքերնիս յանկարծ քանի մը բոլեկելով, երբեմն ալ սրտերնիս քանէ մը կոտրելով։ Մեկն որ այս ճշմարտութիւնները ճանչնայ, ոչ միայն ջտարակուսիր յայտնեալ կրօնին աղեկութիւններուն վրայ, այլ նաև կրնայ գրեք համարձակիւ ու ըսել. Աստուած պարտական էր այսպիսի կրօն մը տաղու իր տկար արարածներուն։

Այսպիսի եական ու հարկաւոր նիւրի մը վրայ անոր համար ալ աւելի սիրով կըմտածէի որ՝ առաքինի եւ իմաստուն քրիստոնեից նետ իմաստափրութեան վրայ խօսած ատենս՝ վրանին այն ջափազանցութիւնները չեի տեսներ ինչ որ անողոքելի անհաւատները կընծայեն անոնց։ Զրպարտութիւն է ըսելք անոնք մարդուս քանականութիւնը խղղել կուզեն. անոնց բաժը այս քացալյալու քանն է քէ հաւատոյ

խորհրդական մասերուն մեկնութիւն տալը
անկարելի է. բայց համարձակ կը քարո-
զեն որ քող մարդկային բանականութիւնը
գայ քննել եւ դատէ քէ ինչ պատճառներով
կը հաւատանք մենք այս եւ այն բանին։
Եթէ կուզենք ամենայն ազատութեամք ի
գործ դնել այն իրաւունքն որ ունինք ամեն
բան քննելու, ասկէց աւելի ինչ կուզենք։

Քրիստոնեայք աստուածային յայտնու-
թեան հրամաններուն տակն ըլլալով, կը-
սիրեն ու կը պատուեն այն յայտնութիւնը
իբրեւ իրենց մեկ հատիկ ապաւեն ու
առաջնորդ։ Կրթեալ մտքի տէրերն ու գի-
տուններն այ կը հաւանին այն մարդկանց
որ իրենց խելքը կը բանեցընեն ճշմար-
տութիւնը գտնելու. ի հարկէ մարդկային
իմաստութեան աղօտ նշոյլը աւելի այ մուք
կերեւնայ իրենց՝ երկնային լուսոյն պայ-
ծառութեանը առջեւ. եւ սակայն Աստուծոյ
անհուն բարութեանը վրայ կը զմային, եւ
փառք կուտան իրեն որ մարդս առանց բա-
րոյական օգնութեան չէ քողուցած։ Նոյն
իսկ բազմաստուածութեան խաւարին մեջ՝

մարդուս քանական միտքը՝ բնական օրինաց եւ խղճմտանքի ձայնին առաջնորդութեամբը բազմարիւ Փիլիսոփաներ հանեց որ մինչեւ աշխարհիս վերջը անուննին հոգակաւոր պիտի ըլլայ: Պոսիւէ ամենայն կերպով կըգովէ զիրենք. « Խելքէ դուքս օգուտներ ըրաւ, կրու, Փիլիսոփայութիւնը՝ Յունաստանի վիճակը յաւ պահպանելու համար : Որչափ որ այն ժողովուրդներն ազատ էին, այնչափ այնարկաւոր էր հաստատել անոնց մեջ ուղիղ պատճառաբանութիւն, եւ բարի վարուց եւ ընկերութեան կանոններ : Պիրազորաս, Թաղէս, Անաքսազորաս, Սոկրատէս, Արքիտաս, Պղատոն, Քսենոփոն, Արիստոտէլ եւ ուրիշ անրիւ իմաստասերներ գեղեցիկ խրատներով Յունաստանը լեցուցին : Իրաւ է որ քանի մը անձոռնի մարդիկ այ եղան որ իրենք զիրենք Փիլիսոփայ անուանեցին, բայց ժողովուրդը անոնց միայն հետեւեցաւ՝ որոնք որ կըսորվեցընէին անձնական շահը՝ եւ մինչեւ կեանքն այ հասարակաց օգտին եւ Տէրութեան բարւոյն համար զոհել. եւ Փիլիսոփայից ամենէն սո-

վորական դարձած տոածն այս եր քէ
Հարկ է կամ քաջուիլ հասարակաց գոր-
ծերէն և կամ անոնց մէջ հասարակաց բա-
րին միայն դիտել։ »

Մարդկային իմաստութեամբ գրուած
բարոյական գրքերն օգուտ մը ունին որ
մեծ մտադրութեան արժանի է։ Երբեմն
այն գրքերն են որ մարդկանց միտքը
առաջին փրկաւետ խորհրդածութիւնները
կը ձգեն, այնպիսի մարդկանց որ ճշմարիտ
իմաստութիւնը բովանդակող գրքերէն կը-
խորշին։ Ինչպէս ահա այն երիտասարդն
որ ատենով սուրբ Օգոստինոս մը պիտի
ըլլայ եղեք՝ իր կրիցը շփորութեան ու ադ-
մկին մէջ աւետարանին երեսն ալ չէր ու-
զեր նայիլ, որովհետեւ անոր մէջ իր
փնտոած ճարտասանական ճառատանքը
չկար։ Օր մը Փիլիտփայութեան ետեւէ
ըլլալու յորդոր մը՝ այս ինքն Կիկերոնի
Որտենսիոս անունով ճառը ձևոքն ընկաւ.

⁴ Խոսք ի վեպս ազգաց, Մասն Գ, Գլ. Ե :

կարդաց այն գրուածքն ու մեկեն միտքը
դրաւ որ իմաստութեան ետեւէ իյնայ¹:
Անկեց եռքն ալ մոլորութեանց մէջ մնաց
երկար ատեն. բայց երբ մարդս ինչպէս որ
պէտք է կը հասկընայ թէ կարօւ է ճշմար-
տութեան հասնելու, խարեական մտածու-
թիւնները չեն կրնար զինքը շատ ժամա-
նակ արգիլել. իրական ճշմարտութիւնը
միայն կրնայ զինքը գոհ ընել. անոր ետեւէն
կիյնայ անդադար, Նախախնամութիւնն
ալ վերջապէս անոր շանքը կը պատկէ:
Երանի այն մարդուն որ ծնած ատենէն
ճշմարտութիւնը կը նդունի եւ միշտ հաւա-
տարիմ կը մնայ անոր: Երանի այն մարդուն
որ յանկարծական պայծառութեամբ մը
կը նդունի ճշմարտութիւնը. բայց շատ ան-
զամ ինչպէս ի բնական կարգի՝ նոյնպէս
ալ ի բարոյական կարգի, վերջալոյս՝ ար-
շալոյս ու ցորեկ կայ:

Խիստ շատ անզամ կը մտմտայի թէ ի՞նչ

¹ Խոստվանութիւնք սրբոյն Օգոստինոսի, Գիրք Գ,
Գլ. Դ և Ե:

անհուն օգուտ և այս օգուտս որ կրօնն
ունի, այսինքն որ իր պատուիրանացը հետ
ոյժ ալ կուտայ զանոնք ի գործ դնելու:
Իրաւ և որ երբոր կրօնը մարդկանցմէ կը-
սկահանջէ իր օրինացը հնագանդիլ, անոր
փոխարեն զօրաւոր պատճառներ ունի
հատուցումն ընելու, ինչպէս և այն օրինաց
վրայ տպաւորուած աստուածային կնիքը
եւ այն յաւիտենական վարձքն ու սպա-
տիմներն որ անսխալ դատաւորը պիտի
բաժնէ ամենուն. Եւ սակայն ուրիշ որչափ
հնարքներ ալ կըրանեցընէոր մեր անհաս-
տատ ու ցրուած մտքին առջեւը պահէ
միշտ պարտքերնիս: Այն առաջին ան-
գամն էր որ ուշադրութեամբ մը նայեցայ
կարուղիկէ հաւատոյ բարեպաշտական
կըրութեանցը վրայ: Մինչեւ այն ատենը
շատ անգամ արհամարհանօք նայեր եի
անոնց վրայ, բաց ի մեկ բանէն՝ որ և
աղօրքը: Կարելի բան չէ իրաւցընէ աս-
տուածեանի տեղ դնել այն մարդն որ կըսէ
քէ կը հաւատամքէ Աստուած մը կայ, բայց
իր յաջողութեան օրերը ամենեւին երախ-
տագիտութեանեւսիրոյնշանմը չցուցըներ

Աստուծոյ, եւ փորորիկներէ չարշարուած ատենը անոր գերազոյն ողորմութեանը չապաւինիր : Իմաստակներ կան որ կըսեն մեզի . անմտութիւն է աղօքք ընելը, միտքը դնելը թէ ողորմելի արարածներու խօսքով Աստուած տիեզերաց օրէնքները պիտի փոխէ : Իսկ ես քրիստոնեայ ըլլալէս առաջ ալ անմտութիւն կըսեալէի միտքը դնելը թէ Աստուած մարդուս աղօքին մտիկ ըըներ . ապա թէ ոչ՝ կամ ամենակարող պիտի ըլլար եւ կամ ամենողորմ : Երէ իմաստակներուն ողբալի կարծիքն իրաւ ըլլար, սուկալի հետեւանքներ կունենար : Այն ատեն այնպիսի Աստուած մը կունենայինք որ Աստուած չէր ըլլար, հապա երկինքը կեցած անշարժ եւ խուլ մէկ կուռք մը . կոյր բաղդ ըսուածը կըտիրէր երկրիս վրայ, եւ յոյս մըն ալ ամենեփին չէր մնար մարդուս :

Աստուածեանն ալ կրնայ աղօքք ընել, եւ զերմեռանդութեամբ ընել . բայց շատ անհոգ կըլլայ կատարելու այս գործն որ մարդուս բարոյական կեանքը պահպա-

Նեղու այնչափ հարկաւոր է. ինքը աստուածեանը միայն կըդատէ թէ որ ատենները աղօրքի հետ պիտի անցընէ, եւ խիստ քիչ արտաքին օգնութիւններ կան որ իր միտքը ձգեն աղօրքի ատենները։ Աստուածեան եղած ատենս աղօրք կընէի ես, բայց անկանոն կերպով, թէպէս եւ շատ անգամ կառաջադրէի որ չմոռնամ, եւ սիրոս դիւրաւ կընդունէր կրօնական տպաւորութիւնները։ Ամեն անգամ որ գեղեցիկ տեղ մը տեսնէի՝ Ստեղծողին բարերարութիւնները միտքս կուգար ու այն տեսարանն աւելի ալ կը գեղեցկանար. եւ քաղաքական խոռվութիւններն ու երկպառակութիւնները աւելի այն ատեն անմիշիրար տրտմութեան մէջ կըձգեն զիս՝ երբոր զմայլելով կրմտածեմ թէ ինչ փառաւոր ու սիրուն բնակարան տուեր է մեզի Աստուած որ խաղաղութեամբ անցընենք կեանքերնիս։

Բանտարկեալը չկընար իր մարմնոյն բնական ոլժը պահել՝ թէ որ ատեն ատեն մաքուր օդ շնչել չտան իրեն. մարդուս

հոգին ալ չկրնար պահել ու կենդանացը-
նել իր բարոյական ոյժը՝ քէ որ միշտ այս
կիրքերով ալեկոծեալ աշխարհիս երեսը
մնայ, եւ մտքովը չվերանայ ատեն ատեն
այն երկնային խաղաղաւետ օքեւանները։
Երջանիկ է այն քրիստոնեան որ իր կրօ-
նին զօրութեամբը հարկադրուած է կա-
նոնաւոր կերպով ընելու իր աղօքը։
Ամեն օր արթըննալուն պէս՝ աջուրները
կը դառնան առ Հայրն հասարակաց.
ամեն օր՝ քնանային առաջ միտքը կըքերէ
ըրած պակասութիւնները. այսպիսի խե-
լացի կըքութիւններէն զատ ինչ բան կրնայ
ըլլալ որ աւելի յարմար սեպուի մարդուս
բանականութեանը։

Երկար ատեն միտքս դրեր եի քէ մեր
եկեղեցիները մեյմեկ գործարան են աւե-
լորդապաշտութեան։ Երբեմն ներս կը
մտնէի՝ կամ ընդունայն հետաքրքրու-
թեամբ եւ կամ աղեկ մը զննելու եւ քննե-
լու դիտաւորութեամբ։ Օր մը տեսայ որ
քաղաքական խնդիրներու վրայ իրարու
ներհակ կարծեաց տէր մարդիկ հոն մտեր

ու մի եւ նոյն սեղանին քով ծունկ չոքեր
են։ Երեսնին հեզ ու հանդարտ էր. ուշա-
դրութեամբ իրենց ձեռքի գրքերը կը կար-
դային, եւ գրքերուն մէջ կապսպրուէր
իրենց որ մեկմեկու համար աղօքք ընեն.
այս բանս շատ անոլշ խորհրդածութիւն-
ներու պատճառ եղաւ ինծի : Թանի որ կը
նայեի այն լուռ եւ հանդարտ կեցած բազ-
մութեանը վրայ՝ սիրտս աւելի կը
փղձկէր. միտքս եկաւ Քրիստոսի տեառն
մերոյ այն խօսքն որ ըսած է. « Երբոք շա-
տերնիդ մեկտեղ աղօքք ընէք՝ ես մէ-
ջերնիդ կրկամ. » Եւ քիչ մը ատեն այն
խօսքին ոյժը իմ վրաս ալ իմացայ : Ան-
կարելի բան է որ մեկը յաւ մտադրութիւն
ընելեն ետեւ՝ չհաւանի թէ իրաւցընէ զար-
մանալի է այնչափ բազմութեան մտքին ու
աղաջանաց միաձայնութիւնն ու վսեմու-
թիւնը, որ իրենց յանցանացը վրայ կը
զղջան, Աստուծմէ ոյժ կը խնդրեն իրենց,
եւ բոլոք աշխարհիս խաղաղութիւն եւ
երջանկութիւն :

Այնպիսի երկնային օգնութիւններ կան

որ ես իմ տգիտութեամբս շատ դժուարաւ
կը հասկընայի : Հաւատացելոց զգացմուն-
քին զաղտնիքը իմանալու համար՝ կը
նայէի որ ինքզինքս մտքով անոնց տեղը
դնեմ : Այն ատեն հասկըցայ թէ սուրբ
խորհրդոց ճամբովը ինչ յորդառատ աղ-
բիւրներ բացուած են զօրութեան, վստա-
հութեան եւ խաղաղութեան՝ քրիստոնէից
համար : Բայց այն նրաշալի բաները հազիւ
կրցայ աղօս կերպով մը նշմարել . վասն
զի մարդուս սրտին ամեն ազնուական
զգացմունքներուն վրայ ալ խորհրդաւոր
քող մը ձգուած է, եւ մարդս այն ատեն
միայն կրնայ ճիշդ զաղափար մը ունենալ
վրանին՝ երբոր ինքն ալ անձամք համն
առնու : Այս բանս պատճառ է նաև այն
դժուարութեան որ քրիստոնէայք կը քա-
շեն ու կը քրտնին՝ երբ կաշխատին որ
իրենց զմայլած քաղցրութիւնները բացա-
տրեն հասկըցընեն անհաւան մարդուն :
Այս դժուարութեան՝ այս արգելքին պատ-
ճառ, նորէն կըսէմ, հանրական օրէնքն է :
Ճարտասան մատենագիրներ, հանձարեղ
բանաստեղծներ, միքէ հասարակ ժողո-

վուրդը կը հասկընար ձեր խօսքերը՝ թէ
որ Ելեհիք իրեն առջեւ ուսմանց եւ փառաց
գեղեցկուրիւնները զովկիք։

Անհաւաններուն սիրու երբեմն աս-
տուածպաշտութեան հանդէսներէն կը
շարժի. բայց շատը կան որ այն հանդէսնե-
րուն իմաստը հասկընալ չեն ուզեր՝ կար-
համարինեն։ Աւստի պատարագը իրենց
համար աննշան աղօքքներու շարք մըն է,
մինչդեռ ուղղափառաց համար՝ նորոգու-
թիւն է Քրիստոսի զոհին ի Փրկուրիւն
ազգի մարդկան։ Ասկէց ուրիշ ինչ բան
կընալ ըստ որ աւելի պատճառ ըստ զի-
րենք ջերմեռանդութեան՝ երախտագի-
տութեան ու սիրոյ մէջ ընկդմելու։ Թէ որ
սուրբ պատարագին ներկայ եղած ատենք
քրիստոնեան հաղորդութիւն ընդունի, այ
կրօնական զգացմունքները մինչեւ անոր
սրտին խորունկը կը բափանցեն ամե-
նայն սաստկութեամբ։ Տարակոյս չկայ
որ Աստուծոյ կարողութիւնը կապշեցընէ
զմեզ՝ երբոր մտքերնիս կը տանինք այն
ժամանակներուն որ տիեզերական մար-

մինները ստեղծեց եւ անհուն ասպարիզին մեջ անոնց ճամբաները գծագրեց. Եւ սակայն խելքս ալ կը վկայէ քէ անսահման էակին համար այս հրաշալի բաները դժուար չեն. Իր ամենակարողութիւնը այն ատեն աւելի զարմանք կը բերէ ինծի՝ երբոր ինքը մինչեւ մեզի կը խոնարիի, եւ ինքզինքը մեզի պէս խեղճ ողորմելի մեղաւորաց կուտայ:

Ո՞րչափ մարդիկ կան որ իրենց մնար նէ՛ կուզէին որ այս դարուս մեջ հաւատոյ վարդապետութեանց խօսքն ալ չըլլայ ամենեւին. սակայն հաւատոյ վարդապետութեանց մարդուս բարոյականին վրայ ունեցած զօրութիւնը չափ չունի: Ամենաբարին Աստուած բաւական չսեպեց ըսելը քէ Սիրեցէք զԱստուած եւ զմարդիկ. որչափ զօրաւոր քաջալերութիւն է այս պատուիրանը գործադրելու՝ Քրիստոսի տեառն մերոյ անձնանուեր չարչարանքն ու փառաւոր յաղթանակը: Սքանչելի ներդաշնակութիւն, որով հաւատոյ ոյժը կօգնէ մարդուս որ խոհական պատուիրա-

նաց ցուցուցած ճամբուն մեջ համարձակ առաջ երթայ:

Եւ սակայն քրիստոնեութեան այս մասը դառն դառն մեղադրութիւններու տակ ընկած է: Քանի քանի անգամ անարգուած է իրրեւ այլանդակ, եւս եւ իրրեւ վնասակար քան: Կըզայրանան անհաւանները սկզբնական մեղաց վարդապետութեանը դեմ. կը հարցընեն ու կըսեն. միքէ կարելի քան է համաձայնեցընել Աստուծոյ զրութեան ու արդարութեանը հետ այս կարծիքն որ իրը քէ բոլոր մարդկային ազգի սերունդները՝ մինչեւ վերջինն ալ՝ այն յանցանաց պատիժը քաշեն որ իրենք տեսած ալ չեն, եւ իրենց ծնանելէն հազարաւոր տարիներով առաջ գործուեր է: Այս հարցմունքին մեկ յստակ պատասխան մը կայ որ նոյն խոկ եղածին պատմութենեն կելքէ: Աստուած զմարդը ամեն նեղութենէ ազատ ստեղծեց, եւ իրեն կամացը բողուց ինքզինքը երջանկութեան մեջ պահելը: Մարդս իր ազատ կամքը զեշի գործածեց, մեղանցեց: Այնչափ հարստութե-

նեն որ ընդուներ էր՝ իր սերնդոցը ժառանգութիւն խեղճութիւնը ձգեց։ Սակայն Աստուած իր դիտաւորութիւնը անկատար չըրդուց. եւ մենք իր զրութեանը երկրպագութիւն ընելու տեղ՝ արդարութեանը դեմ կը զանգատինք։ Մարդս իր ազատ անձնիշխանութիւնը չկորսընցուց, եւ թշուառութեան դեմ պատերազմելու հրաման ու բոյլութիւն եղաւ իրեն։ Թէ որ կատաղի Կայենին օրինակը Ժանտախս մը եղաւ, անդին հեզոյն Արելի այ հետեւողներ գտնուեցան։ Թէ որ այն բարիքն ու բերքերն որ փափկութեան դրախտին մէջ իրենք իրենցմէ կը բուսնեին՝ հարկ եղաւ աշխատութեամբ ձեռք ձգել, սակայն այն աշխատանքներն այ անվարձ չմնացին։ Աշխատութիւնը՝ միայն տառապանաց պատճառ չէ, հապա քիչ շատ վայելքներ այ ունի հետը եւ իրմէ ետքը։ Այն առաքինութիւններն որ կը նային բերեւս անգործ մնալ, մարդուն նոր վիճակին մէջ ծլեցան ու ծաղկեցան։ Աղամայ որդիքս այ իրեն պէս մահկանացու եղանք. բայց մեր անկմանէն ետև փափաքելի էր որ

այս երկրաւոր կեանքը չափ մը ծայր մը
ունենար. հայածանք քաշող խեղճերուն
վերջին ապաստանն այն է: Մեր տրտմու-
թեանցը հետ քանի մը զուարձութիւններ
խառնուեցան, եւ մաղձու մտածութիւն-
ներն ալ իրենց աղւորութիւնները կրնային
ունենալ: Մեր նախահօրը կորսընցուցած
երջանկութեանը թէ որ նայինք, տարակոյս
չկայ որ ասոնք փոքր մխիթարանքներ են.
բայց ուրիշ փոխարեններ ալ կան որ ան-
հուն մեծութիւն ունին: Երկնային ներումն
իջաւ աշխարհիս վրայ. Քրիստոսի տեսոն
մերոյ քաւիչ տնօրենութեամբը հասկըցան
մարդիկ թէ Արարջին գրութիւնը նրջափ է
եղեր իրենց վրայ: Սուրբ հայրապետին
մէկը փրկագործութեան հրաշալի խոր-
հուրդը մտածելու ատեն՝ Երախտագի-
տութեննեն զմայլած՝ այնպէս վառուեցաւ
Աստուծոյ սիրովն որ բերնեն այս վսեմ
խօսքը հանեց թէ « Ո՞վ երջանիկ յան-
ցանք ^{4:} »

⁴ Լատին եկեղեցւոյ մէջ երգ եղած է սրբոյն Օգոս-
տինոսի այս խօսքը:

Խորհուրդները բացառութեանք կրնար
մենք. բայց կրնանք անոնց ըրած բարի-
քեն հասկընալ իրենց օգտակարութիւնը։
Այս օգտակարութիւնը ամենապայծառ
կերպով կը պահանջեմ՝ երբոք Թրիստոսի
մեր վրայ ունեցած սերը մարդկանց սրտին
վրայ այնպէս կազդէ որ դիւցազնական
նուիրմունքներ ընելով՝ մինչեւ կեանքեր-
նին այ կը զոհին իրեն համար։ Միքէ խոր-
հրդոց անհասանելի ըստալը յայտնի նշան մը
չէ իրենց երկնային ծագում մը ունենա-
լուն, եւ քէ այն աներեւութիւն Աստուծոյ
ձեռքեն եղած են որ իր բարերարութիւն-
ներովն այ ներկայ էմկէցերնիս։ Յաւխունա-
կանն Աստուծած արդար ըստալուն համար,
բացայսոյ ու անբերի կերպով խոհական
պատուիրաններ տուաւ։ Բայց անմտու-
թիւն ըրնենք ու ասկէց չհետեւցընենք քէ
պարտական է նաև պատասխան տալու
այն հարցմունքներուն որ մեր ամբարտա-
ւանութեան սնուտի հետաքրքրութիւնը
մտքերնիս կը դրդէ ընելու։ Խորհրդոց օգ-
տակարութեանը մեծ ապացուց մըն այս
է որ մարդու հպարտութիւնը կը ճգմեն ու

խոնարհութիւն կը սորվեցընեն մեզի. Եւ
այս խոնարհութիւնը առաքինութիւն մի է
որ շատ հարկաւոր է մտքերնիս ձգելը, եւ
անունն անգամ արհամարհելի կերեւնայ
մեզի: Եւ սակայն Ֆենեկոնի պէս մարդը
խոնարհ էր, որ հոջակաւոր եւ տարաբաղդ
վիճաբանութենէ մը ետեւ ինքիրմէ հրա-
տարակեց իր յաղթուիլն ու հպատակիլը:
Խոնարհութիւնը բոլորովին քրիստոնեա-
կան առաքինութիւն մը ըլլալով, համես-
տութենէն շատ վեր է. ինչպէս որ աստուա-
ծային կամաց հետ միաբանիլը աւելի մեծ
է քանի թէ Աստուծոյ կամաց հպատակիլը:
Ո՞րչափ ճիշդ ու ինչ գեղեցիկ զրուցուածք
է այս խօսքս որ մաքուր սրուկ մը բխած է.
« Խոնարհ ըլլալը՝ ինքիր դատաստանը
կորել է: »

Խորհուրդներուն ամեն մեկը զատ զատ
չեն կենար. Երրորդութիւն, Մարդեղու-
թիւն, Փրկագործութիւն, այս երեքն այ
իրարու հետ կապուած են: Ո՞րչափ այ մուք
ըլլան՝ ինծի համար շատ պատկառելի եին,
եւսակայն երկարատեն շինծուստակիպէս

Եին իմ առջեւս : Մեկ դիտողութիւն մը ըրի,
անով այս մոլորութենու ալ արրընցայ :

Քանի որ աստուածեան եի եւ կրօնական
զգացմունքներ ունենալու կը բաղձայի,
ատեն կը լար որ կը զանգատէի թէ ինչո՞ն
համար այնչափ նեռու և Աստուած մեր աշ-
քեն . Եւարտում տխուր կը մտածէի թէ շատ
աստուածեաններ թերեւս մտքերնին դրած
են որ Աստուած ըսածդ լոկ վերացեալ գա-
ղափար մի է : Այսիրաւ եոր բազմաստուա-
ծութեան վերնալուն վրայ ամենեւին ցա-
ւելու տեղի չկայ . անձոռնի եւ լիմարական
հաւատք . աստուածները զԱստուած եր-
կնքեն կաքորեկին , եւ կարծես թէ անոր հա-
մար միայն կը նոտանենային մարդկանց
նետ որ խղճմտանքնին հանգչեցընեն մո-
լութեանց վրայ՝ որոնց օրինակ տուողներն
իրենք եին : Բայց աստուածեանց կար-
ծիքը իմ սրտիս ամեն պիտոյքը չկը կը նար
լեցընել . վասն զի չկը նար Ամենակային
նետ այնպիսի կապեր հաստատել մեջերնիս
որ մեր տկարութեանը յարմար ըլլան :
Ճշմարիտ կրօն այն պիտի ըլլայ որ զմեզ

լուսաւորելու և զօրացընելու համար հարկաւոր եղած ամեն օգուտներն այ ունենայ. իսկ աստուածեանց կարծիքը չունի զանոնք. ճապաղ եւ անորոշ բան մըն է. մարդուս վրայ տիրելու եւ զինքը դեպ ի երջանկութիւն տանելու հարկաւոր եղած հնարքներէն զուրկ է. անով այ կիմացուիք աստուածեանց կրօնը անկատար կրօն մի է: Կիմանայի որ խնդիր մը կայ առջեւս՝ լուծման կարօն, կաշխատէի որ հասկընամ ինչ ըլլալը, եւ չեի տեսներ որ փնտուած բանս իմ քովս էր: Երբորդութեան խորհուրդը կըսորվեցընէ մեզի քէ մի միայն Աստուած կայ՝ անսահման, պարզ հոգի, եւ երեք անձինք ունի՝ ըստ ամենայնի մեկմեկու հաւասար, նոյն աստուածութիւնն ու նոյն բնութիւնն ունենալով: Աստուածային անձանց մեկը մեր մարմնոյն նման մարմին առաւ, ու երբոր մեզի համար պատարազուելէն եռքը երեխնք ելաւ՝ հանդերձի մը պէս մեկոյի չղրաւ այն առած մարմինք: Ապա ուրեմն քրիստոնեայք կրնան տեսնել զԱստուած մարդացեալ, ներկայ զտնուիլ անոր մա-

հուանն ու յարութեանը, երկրպագութիւն
ալ ընել անոր յերկինս՝ տոանց մարդա-
կերպեան ըստալու¹: Աստուածեանց կար-
ծիքներուն անբաւականութիւնը տես-
նելով՝ քանի կերրար բաղձանքս կաւելնար
ճշմարտութիւնն հասկընալու. այս բաղ-
ձանքս քրիստոնէական հաւատոյ պա-
տասխաններովը այնպէս դիւրաւ ու ճշդու-
թեամբ կատարուեցաւ որ սաստիկ ուրա-
խութիւն մը զգացի սրտիս մէջ երրոր
տեսայ թէ ճշմարտութիւնը լուսոյ պէս ծա-
գեցաւ խորհրդոյ մը՝ այս ինքն անխմանալի
քանի մը մէջէն: Աստուածալին լոյսը որ-
շափ որ մարդու սրտին խորունկը բա-
փանցէ, այնչափ աւելի կիմացուի թէ ամէն
խորհուրդները մէկտեղ որ առնունք՝
ստոյգ պատմութիւնը կը գտնենք թէ ինչ
յարաբերութիւններ ունեցեր են երկինքը
երկրիս ու երկիրս երկնքին հետ:

Հաւատոյ վարդապետութիւնները, բարի

¹ Մարդակերպեան կրտուեին այն աղանդաւորքն որ
չորրորդ եւ տասներորդ դարուն մէջ եղան, եւ կրտեին
թէ Աստուած մարդկանին կերպարանք մը ունի. Թ.:

Վարուց խրատները եւ աստուածազաշտութեան արարողութիւնները պահպանելու համար սուրբ եւ բազմաթիւ զինուորութիւն մը կայ¹ որ մեջինները իրենց բոլոր կեանքը նուիրած են կրօնին։ Իրենց պաշտած Տիրոջն օրինակով՝ աղքատիկ հիւղերուն մեջ այնպիսի խրատներ կը տանին կը քարոզեն որ իրենց անարատութեանը կողմանէ շատ սւելի զերազանց են քան զայն քարոյական խնդիրներն որ Առտիկեի եւ Հռովմայ իմաստուն մարդկանցը համար վիճարանութեան նիւթեր եղած էին։ Անոնց քարողութեան ձայնը կը լսուի՝ թէ ապականութեան կեղրոն սեպուած քաղաքներուն եւ թէ գեղերու մեջ։ Իրենց քաջարտութեամբը հեռաւոր աշխարհներ կերրան՝ մինչեւ սուկալի կլիմաներու տակ. վայրենի եւ քարքարոս մարկանց կը հասկըցընեն խօսքերնին. եւ որոնք որ կամ աշխատութենեն յոզնած դադրած, եւ կամ մարտիրոսութեան տանջանքներուն

¹ Քահանայք, քարոզիչք. Թ:

մատնուած՝ կը վերջացընեն կեանքերնին,
իրենց հոգին աւանդելու ատենն այ նոյն
խօսքը կը կրկնեն թէ « Սիրենք զԱստուած
եւ զմարդիկ : »

Քրիստոնեայ կանայք՝ եղբայրսիրու-
թեան եւ ողորմածութեան ուժովը միարա-
նած, այն եկեղեցականաց զերազոյն աշ-
խատանքներուն մասնակից կը լլան, եւ
աւելի իրենց քարի օրինակովը կը քա-
րոզեն: Ոչ միայն իրենց ծնած քաղաքնե-
րուն մեջ, իրենց ընտանեացը մօս՝ տղաք
կը կըրեն ու հիւանդներ կը հոգան, այլ եւ
դեպ ի աշխարհիս ամեն կողմերը իրենց
քարեգործութիւնները օրէ օր կըտարա-
ծեն: Հիմա որ այս քաներս գրելու հետ եմ՝
լսեցի թէ Ափրիկէի մեջ զամկնքը կապշե-
ցընեն ատնք իրենց վրայ, եւ կըսուի թէ
մեջերնեն շատը մինչեւ Ասիոյ խիստ հեռա-
ւոր ծայրերը պիտի տանին մօս ատեններս
իրենց սրտաշարժ խնամքն ու Քրիստոսի
փրկագործ նշանը:

Այս յայտնի քան է որ երկ մեկտեղ քերես

ան ամենայն հնարքները՝ որոնցով
քրիստոնեութիւնը մարդկանց վրայ իր
ոյժը կը բանեցընէ, մեծամեծ չափութիւն-
ներ կրնան ըստ աշխարհիս մեջ։ Այս
հնարքներն այ այնպահ շատ ու այնպէս
գեղեցիկ յարմարութեամբ իրարու հետ
կապուած են որ անկարելի բան է չտես-
նելը քե ամենակարող եւ ամենիմաստ
օրենսդրի մը գործն են։ Թող ասուա-
ծեանք երե կրնան՝ ցուցընեն մեզի բանա-
ւոր կերպով մը՝ ինչ հնարքներ ունին այս-
պահ ընդարձակ եւ տեսակ տեսակ օգնու-
թեանց եւ նպաստներու տեղը բռնել տա-
լու։

Արիշ շատ դիտողութիւններ այ ըրած
եմ. բայց ամենն այ մինչեւ հիմա ըստնե-
րուս նման ըլլալուն՝ զանոնք այ լիշելը
աւելորդ է։ Եմ միտքս այն եր որ անցած
ճամրուս վրայ մելմը նորեն աչքս դարձը-
նեմ, եւ այնպէս հասկընամքելը ըրած քննու-
թիւններուս հետեւանքն ինչ պիտի ըլլար։
Ենքինքս իրարմէ պայծառ ու իրարմէ
բարձր մտածութիւններու տուած՝ կարծէի

թէքիչ ատենեն մնացած թէրեւ ամպերն ալ
պիտի փարատին աջքիս տոցեւեն, եւ մօ-
տեցեր եմ նաւահանգստին։ Ե՞նչպէս խա-
րուեցայ ու ցաւեցայ... Յոյս այնչափով
չեցուեցաւ։ Երաւ է որ քրիստոնեութեան
օգտակար ըլլալուն վրայ տարակոյս չէր
մնացած միտքս. այլ մանաւանդ օրէ օր
անժխտելի ապացույցներ ալ կը գտնեի.
բայց մեկ հաւատոյ վարդապետութիւն մը
հաւատացելոց վրայ օգտակար ազդեցու-
թիւն մը ընելուն համար միայն՝ չհետեւիր
թէ ի հարկէ ճշմարիտ է այն հաւատքը։
Խորիութիւններուն ըրած մեծամեծ օգուտ-
ները տեսեր էի. բայց միքէ անով այն խոր-
իութիւնները աւելի դիւրիմաց, ուստի եւ
աւելի հաւատալի կը ցայիին։ Քրիստոնեու-
թեան ոյժը լու հասկըլնալու համար, քիչ
մը ատեն մոքովս քրիստոնելից մէջ ապրե-
ցայ, նայեցայ որ ևս ալ իրենց պէս մը բա-
մտամ։ Պէտք էք որ նոյն բարեկարու-
թեամբ իմ վիճակս ալ փոխեի որ կարենայի
առանց կողմնասիրութեան դատաստան
ընել այն դիտողութիւններուն վրայ որ հա-
ւաքիր էի։ Վասն զի իմ տկար խելքիս նիս

սովորութիւնները կրնային գօրանալ իր
վրայ ու տիրապետել, ևս այն ատեն կը
վհատէի. Եւ վախնալով որ չըլլայք մարին
անցնին նաեւ այն քրիստոնէական հաւա-
տոյ առաջին նշույններն որ դեռ նոր առեր
էի անոնց անպատմելի գեղեցկութեան
ճաշակը, կըսէի ինքիրենս մելամաղձու
սրտով. Ինչ կըլլար, քող հաւատոյ ճշմար-
տութիւնն այ նոյնչափ բացայալո լլար՝
որչափ որ օգտակարութիւնը բացայալո է:

Օր մը երբոր տրտում տխուր նոյն գան-
գատը կընեի ինքիրենս՝ յանկարծակի բան
մը եկաւ միտք. առաջ աջուրներս վար
առի, բայց շատ չանցաւ, բարի յուսով մը
լեցուեցայ: Սիսալմունք մը ըրած էի որ
մինչեւ այն ատեն ամենեւին ուշ չեի դրած.
այս ինքն քրիստոնէական հաւատքը քըն-
նելու ժամանակս այնպէս վարժեր էի ինք-
զինքս ամեն բանի խելք հասցընող եւ ու-
րիշի առաջնորդութեանը անկարօտ սեպե-
լու որ յանդուզն եւ հպարտ տգիտու-
թեամբս ամենեւին մեկու մը խորհուրդ չեի
հարցուցած քէ: քննութիւններս ինչ մամրով

ընեմ : Կրօնին օգտակարութիւնը ճանչնալը դիւրին է, վասն զի իր ըրած քարիքները աջքերնուս տոցեն՝ են . բայց շատ աւելի տեղեկութեան կարօտ ենք որ կարենանք կրօնին ինչ ըլլալը հասկընալ, եւ ձշմարիտ ըլլալը իմանալ : Ամենահարկաւոր բան եք որ զիտուն մարդուն մեկը իր հմտութեամբը յանձն առներ իմ չունեցած զիտութեանս պակասութիւնը լեցընել : Քահանայ մը կը ճանչնայի որ ամեն մարդ մեծ պատիւ կը ներ իրեն . եւ որովհետեւ երկմտութենես դուքս ելլելու ամենամեծ փափաք մը ունեի, միտքս դրի որ երկրորդ առաւոտը մեկեն ելլեմ զինքը տեսնելու երրամ :

Այն զիշեր քունը կտրեցաւ աջքս : Մեծ ուրախութեան մեջ էի . տարակոյս չունեի որ քրիստոնեական հաւատոյ ձշմարիտ ըլլալուն ապացուցները պիտի լսեմ, եւ այս յուտով կը սպասէի : Թէ որ տարակոյս աւելի երկար առենքշէր, անտանելի պիտի ըլլար ինծի : Սկեպտիկեան փիլիսոփայութեան վրայ շատ տեղեկութիւն չու-

նիմ. բայց անունն անզամ չեմ ուզեր յսել
երբոր կը տեսնեմ թէ նաև այն բաները
կը մըրնցընք որ ամենահարկաւոր եր
մեզի պարզելն ու բացատրելը, մանաւանդ
թէ զանոնք միայն կը մըրնցընք. վասն զի
քիչ հարկաւորութիւն ունեցող խնդիրները
Փիլիսոփայութեան այ կարօւ չեն. անոր
տեղը արհամարհանքն ու անտարբերու-
թիւնը կը բռնեն: Առաւու եղաւ, սիրոս
անհանգստութիւն մը մտաւ. սկսայ մտա-
ծել թէ տեղեկութիւնը խնդրած ատենս
հարկ պիտի ըստար որ ամեն բան մեկէն
ըստեմ, ապա թէ ոչ' խոսակցութիւնը կրնար
յանկարծ կորուիլ. եւ այս վախը սրտկո
չգնաց նաեւ այն եկեղեցականին քովը,
եւ շատ կարօւ եի անոր մարդասիրու-
թեանը:

Դնացի սիրոս բացի քահանային. բոյոր
մտածութիւններս, տագնապներս եւ փա-
փաքներս համարձակ առջեւը դրի ու
խոսքս այսպէս վերջացուցի. «Սիրոս իմ
զգացմունքներուս տուած ապացուցնե-
րովք համոզուած՝ կը փափաքի որ քրիս-

տոնկական կրօնը ճշմարիտ կրօն ըլլայ. հրամանքը բոլորովին համոզէ միտքս ինչպէս որ սիրտս կը փափաքի: Բայց թէ որ խելքս համոզելու տեղ հրամայես ինծի որ հաւատամ, թէ որ Աստուծմէ ընդունած պարզեաներուս ամենէն ազնխը հարկ ըլլայ զոհել, հրամանոցդ հետ բան չունիմ, չենք կրնաք իրարու խօսք հասկընալ: »

Պատուական քահանան նախ ու բախսակից եղաւ ինծի որ դարձի եկեր եմ, ու վրայ բերաւ. « Թէ որ քեզի ըսելու խօսքարուս մէջ բան մը գտնուի որ քու խելքիդ իրաւանցը դպչի, կը խնդրեմ որ խօսքս կտրես. ըսել կը լլայ թէ միտքս աղէկ հասկըցընել կրցած պիտի ըլլամ, ուստի սխալմունքս պիտի շտկեմ: » Այս քաղցրութիւնը այնակս տակնուվրայ ըրաւ սիրտս որ չեմ կրնաք հասկըցընել. հասկըցայ որ ես հերանոսին մէկն ես՝ ու դիմացինս քրիստոնէին մէկն ե:

Այն սրբակաց քահանային բերնեն լսած բաներովս եր որ ետքը իմ « Խորիրդածու-

թիւնք յաղագս Քրիստոսական հաւատոյ »
անունով գրուածքիս մեկ մասը շարա-
դրեցի ¹:

Զեմ կրնար այն խօսքերը հոս օրինա-
կել. բայց ցուցընեմ թէ ինչ ճամբայ ըռնեց
իմ պատկառելի առաջնորդս՝ զիս նպա-
տակիս հասցընելու համար:

« Ոչ երբէք զարմանք եկեր և ինծի,
ըստ, թէ քրիստոնեութեան մեջ ինչու հա-
մար խորհուրդներ կան. վասն զի գիտէի
որ ամեն բանի մեջ ալ խորհուրդ կայ, թէ
բնական աշխարհիս մեջ եւ թէ մտաւորա-
կանին, թէ մեր մեջ եւ թէ մեր չորս դին:
Ինծի համար զարմանալին այս և թէ որ-

¹ Այն գրուածքս նրանարակելու մօտ առենս մտքս
անցաւ որ սկիզբը իմ մոլորութիւններուս պատմութիւնը
դնեմ. բայց շոտ մը ես կեցայ այս մտածութենին, եւ
իմայ ալ կարծեմ թէ իրաւունք ունիմ: Քրիստոնեու-
թեան ձշմարտութեանը քանի մը ապացուցներ տալ էր
միտքս. ուրեմն բսի՝ ամենեւին հարկաւոր բան չէ որ
ես իմ վրաս դարձընեմ նախ կարդացողին մտադրու-
թիւնը: Անձնական մանր մունք տեղեկութեանց համար
տեղ չէր պակսեր ծանօթութեանց կամ յաւելուածի մը
մեջ :

շափ անհաւաններ կան որ իրենց խօսած
նիւթերուն ամենեւին խելք չեն կրնար հաս-
ցընել: Շատ անգամ ըստդներ եղեր են ինծի
թէ « Կրօնի մեջ բաներ կան որ չեմ հաս-
կրնար. բացատրէ ինծի, կը հաւատամ: »
Բայց խորհուրդներն ալ կրօնին մասն են,
անկեց չեն կրնար բաժնուիլ. ուստի երբոք
մեկը քրիստոնեայ ըլլալու մտքով կուզէ
որ խորհուրդները բացատրուին իրեն եւ
կամ բոլորովին վերցուին՝ նոյն և թէ ըսկը¹
ուրիշ խօսքերով. « Քրիստոնեութիւնը
կընդունիմ ես՝ թէ որ տակնուվրայ ընես
զայն: »

« Խորհուրդները պիտի բացուին ատե-
նով, եւ արդարոց բնակարանին մեջ խոր-
հուրդ պիտի չմնայ. բայց մարդս զԱս-
տուած տեսնելին առաջ պէտք է որ փոր-
ձուի, նեղութիւն քաշէ. այս փորձերուն
մեկն ալ աշխարհիս վրայ այս և ահա որ
հարկադրի հաւատայ խորհուրդներուն՝
առանց խելք հասցընելու անոնց: Թող սն-
միտ ամբարտաւանութիւնը զայրանայ,
ինչ վնաս ունի. բաւական է որ ողջամիտ

խելքը համոզուի թէ հարկ է խոնարհիլ: Եւ
այս համոզումը կարելի է՝ ապացուցանե-
լով թէ կրօնը յայտնութիւն է, այս ինքն
Աստուծմէ յայտնեալ ճշմարտութիւն է:

« Անհաւան մարդիկ փուռ տեղը կաշ-
խատին որ աստուածային յայտնութեան
ապացուցները մըրենցընեն ամպուեն :
Քրիստոնեական հաւատոյ մէջ ամեն բան
վսեմ եւ ամեն բան պարզ է: Այս հարց-
մունքներս, — Քրիստոս մեր նախնեաց իր
վարդապետութիւնները՝ իր քարոյականը
սորվեցուցեր է թէ չէ. — խաջութիւր է թէ չէ.
յարութիւն առեր է թէ չէ, — այնպիսի
հարցմունքներ են որ կրնան քննութեան
տակ իյնալ ուրիշ պատմական դիպուած-
ներու պէս եւ սուզուիլ:

« Անհաւաններն այս կրսեն. կրնայ զիս-
ցուիլ թէ Քրիստոս Հրեաստանի մէջ
քարոզութիւն ըրեր է, ինչպէս որ զիտենք
թէ Սողոն օրէնսդրութիւն ըրեր է Աստիկէի
մէջ. այս բաներս նոյն կարգի բաներ ը-
լայով՝ նմանութիւն մը կրայ մէջերնին: Բայց

երբոր խրատի կամ օրինաց զօրութիւնը
աւելցընելու մտքով՝ գերբնական դի-
պուածներ մէջ բերուին, այն առեն ասոնց
մէջ եւ առաջին նիւրոց մէջ ամեննեւին նմա-
նութիւն չմնար: Մարդուս խելքը գերբնա-
կան դիպուածները ըրնդունիր, եւ քէ որ
հրաշք ընդուներ՝ իր գիտութիւնը պիտի
մոռնար եւ իշխանութենեն պիտի հրա-
ժարեր:

« Անոնց այս կարծիքը հաւանական այ
չերեւնար ինծի: Իրաւ է որ այն երկու
կարգ նիւրոց եւ դիպուածոց մէջ՝ որոնց
վրայ է խօսքերնիս՝ նմանութիւն մը ըկալ.
րայց քննութեան հնարքներուն ձամբա-
ներուն մէջ կայ նմանութիւն: Դիպուած-
ները քնական եղեր են՝ գերբնական եղեր
են, զանոնք ստուգելու կերպը նոյն է.
միջու պէտք է զգուշութեամբ դիտել զա-
նոնք, կրկին կրկին քննել եւ վրանին
խորհրդածութիւն ընել, խելք բանեցընել:
Լաւ մը քննելիս ետեւ, քէ որ տեսնեմ քէ
այս ինչ դիպուածին պատճառները քնա-
կան բաներ չեն կրնար ըլլալ, եւ սակայն

ինծի այնպէս երեւնայ քէ այն դիսուածին
իրական կերպով պատահիլը ապացուցու-
ած է, խելքս կը վկայէ մեկէն քէ ասիկայ
գերբնական բան է, եւ ասով իրեն իրա-
ւունքը՝ իր իշխանութիւնը կը բանեցընէ.
Բնչպէս կրնաս պահանջել որ ընդ հակա-
ռակն՝ հրաժարի իրաւունքէն։ Գերբնա-
կան բան, հրաշք ըսուածը չկը բար ըլլալ
կը սիսէն։ Թէ որ այս ըսողը անաստուած մը
ըլլար, խելքս կը հասնէր. որովհետեւ անոր
աչքին առջեւը պատճառ ըսածդ չկայ,
կերպով մը իրաւունք ունի գործը կամ ար-
գասիքն այ ուրանալու։ Բայց թերեւս ան-
աստուածներուն կարծիքէն այ աւելի այ-
լանդակը այն մարդկանց կարծիքն է որ
մտքերնին դրեր են քէ կը հաւատան Աստու-
ծոյ գոյութեանը, եւ սակայն կուզեն չափ
եւ սահման դնել անոր կարողութեանը,
բարութեանը։ Այն սըրազան անունն որ
ուոքի տակ կառնեն՝ հարկաւ Անհուն էա-
կին անունն է. ուրեմն իրենց յայտնի հակա-
սութիւնը չկը բար կերպով մը արդարա-
նալ. քող իրենք ըսեն քէ որը կուզեն, Ան-
հուն եակը պաշտել քէ Աստուծոյ գոյու-
թիւնը ուրանալ։ »

Սրբակաց քահանային կարծիքն այս եր
թէ մարդս կրօնի ապացուցներուն ամենն
այ պետք է սորվի, քայց մի միայն յայտնի
եւ անտարակուսելի ապացուցն այ բաւա-
կան է բարեմիտ մարդու մը աչքը բանա-
լու: Յորդորեց զիս որ ամենայն ուշադրու-
թեամբ մտմտամ Քրիստոսի յարութեանը
հրաշքին վրայ՝ որ Պօղոս առաքեալ մեր
կրօնին ձշմարտութեանը հիմն է կրու¹: Իմ
պատուական առաջնորդս դիմացս դի-
պուածներ՝ խորհրդածութիւններ դրաւ,
օգուակար զրքերու անուններ տուաւ որ
կարդամ, ու ետքը ըստ. «Գնա հանգիստ
սրտով ու հանդարտութեամբ քննէ, մըտ-
մտա, եւ վստահութեամբ խնդրէ Աստուծ-
մէ որ բարեհամի ձշմարտութիւնը հասկը-
ցընել քեզի: »

Քրիստոսի վրայ Փիլիփովայութիւն
ըրած ու զինքը մեծ մարդու մը տեղ դրած
ժամանակս՝ վարքը աչքէ կանցընէի եւ իր
իմաստուն հրամաններուն ու խելացի օրի-

¹ Ա. Կորնք. ԺԵ, 14:

նակներուն վրայ կըզմալիկի. իսկ մահուընեն ետեւ կարդացմունքս կը դաղըեցընեի և յարութիւնը մտածել ալ չեի ուզեր, վասն զի միտքս դրած էի թէ շինծու պատմութիւն մըն է: Եւ ահա այն գիտուն առաջնորդը միտքս դարձուց այն մեծ խնդրոյն վրայ որ ես այնչափ բերեւութեամբ վճռեր մեկդի ձզեր էի: Քրիստոս յարութիւն առեր է թէ չէ. այս հարցմունքս ամեն բան կորոշէ: Մեյմը որ ըստի թէ յարութիւն առեր է, անհաւաններուն խորին՝ դժուարին ու ամենուն քիասկընալու նիւթերու մեջ փնտոած փուձ ու մուձ պատճառները ամենեւին ոյժ չեն ունենար քրիստոնէից միտքը պղտորելու: Յարութիւնը Քրիստոսի փրկչին մերոյ տնօրէնութեանցը վրայ աստուածային կնիք մըն է. ապա ուրեմն Քրիստոսի խօսքը անսխալ է, եւ իր յայտնած կրօնին մեջ որչափ ալ խորհրդաւոր բաներ ըլլան՝ պետք է ամենայն վստահութեամբ ընդունիլ: Երբոք մարդուս բանականութիւնը չէ կուրցած հպարտութեամբ, բաւական լոյս կունենայ որ գիտնայ թէ չկընար ինքը ամեն բանի իսկը

հասցընել, եւ թէ Աստուած սուս ըսել
չկրնար:

Նորէն կարդացի աւետարանը. Երկու
բան տեսայ որ նոր կերպով մը զարկին
աջքիս: Յիսուս դեպի Երուսաղէմ ճամ-
բայ ըրած տաենք շատ անզամ կըսէ աշա-
կերտներուն. « Ես շատ բան պիտի քաշեմ
իշխաններէն ու քահանայապետներէն, եւ
անոնց ձեռքովք պիտի սպաննուիմ: » Այս
գուշակութեան մեջ կարգէ դուրս բան մը
չկայ. շատ անզամ կըլլայ որ որիշներուն
համար կետնքը դնելու պատրաստուած
մարդը կըտեսէք թէ ինչ վտանգներ կան
աջքին առջեւը եւ ինչեր պիտի գան
գլխուն: Բայց Քրիստոս ամեն անզամ որ
այս տիսրական խօսքերը կըսէ, շուտ մը
վրայ կըբերէառանց ամեննեւին տարակու-
սելու թէ « Երբորդ օրը յարութիւն պիտի
սունեմ: » Այս գուշակութիւնը առջինին
չնմանիր: Այս կարգէ դուրս խօսքերը լո-
ղին միտքը ետեւէ ետեւ ինչ զարմանափ
մտածորիւններ կուգան: Այսպիսի գուշա-
կութիւն ընտը աշխարհիս իմաստուննե-

թէն մեկը չկրնար ըլլայ. կամ երկնքէն
եկած է, կամ խարերային մեկն է:

Թէ որ Քրիստոս յարութիւն չէ առած,
ինքն որ մեզի կատարելութեան օրինակ
կերեւնար՝ խարերային մեկն է եղեր: Ամեն
պարագաներէն յայտնի է թէ Յիսուսի դի-
տաւորութիւնն եղած է մարդկային ազգը
վերանորոգել, եւ իր բարոյական յեղափո-
խութեան վախճանն է եղեր մարդկանց
սիրոը մաքրել եւ սրբել: Թէ որ անհաւան-
ներուն խօսքին հաւատամ, Յիսուս զմեզ
խարած պիտի ըլլայ. իր հրամանները ան-
մարուր թերնէ մը եղած պիտի ըլլան. եւ թէ
որ յաջողութիւն գտեր է՝ այն յաջողու-
թեանց աղքիւրն է եղեր ստութիւն ու կեղ-
ծաւորութիւն: Ո՞ր խելացի մարդը կրնայ
խելք հասցընել ու հաւատայ այսպիսի
գարշելի հակասութեան: Քրիստոսի իմաս-
տութիւնը զմեզ իրեն կըքաշէ, բարոյա-
կանը սրտերնիս կըքանայ, եւ սակայն թէ
թէ որ Քրիստոս յարութիւն չէ առած, խա-
րեւթիւնը տարակոյս չվերցըներ. ըստի է
թէ այն մարդը ոգեր է ասուծոյ պէս

պաշտուիլ, ուզեր է որ մարդիկ կուռքերուն տեղը զինքը պաշտեն:

Արովինետեւ ստիպուեր եմ այս երկու կարծեաց մեկն ընտրել, այս ինքն քէ « Կամ Յիսուս յարութիւն տուր է, եւ կամ Յիսուս խարերային մեկն է, » խելքիս կըհարցընեմ, խղճմտանքիս կըհարցընեմ, երկուքն ալ կըսեն ինծի քէ երկրորդ կարծիքն է միայն որ անհաւատալի է:

Քրիստոնեութիւնը վար զարնող մարդը պիտի ըսէ քէ ես կամաւ կուզեմ սիրու շարժել, ամեն բանի կոյր զկուրայն հաւատալ, եւ քէ ապացոյց փնտոելու տեղը՝ սրտի զգացմունք կըփնտոեմ։ Աչ. ես եղած դիպուածները ողջմտութեամբ քննել կուզեմ։ Քրիստոս զիտէր քէ Հրեայք զինքը պիտի մեոցընեն, եւ ատենը հասեր է որ աշակերտներուն պիտի բողուիրենքիրենց կեանքը ազատելու եւ իր վարդապետութիւնը տարածելու հոգը. ուստի ըստի ըստ քէ Յարութիւն պիտի առնեմ։ Այս բերանը բանեցընելու համար որչափ միամիտ՝ որչափ

անմիտ պիտի ըստ մեկը. վասն զի ասով ինքը ուրիշներուն ձեռքը ամենաղիւրին՝ ամենատոյգ հնարք մը կուտայ իր խարերայուրիւնը դուրս հանելու, եւ այնպէս ընելու որ իր դիտառուրիւններն այ իրեն հետ մեռնին փճանան։ Իսկ Ֆրիսոսի բերնին մեջ այս խօսքը թէ Յարուրին պիտի առնեմ” անժխտելի ապացոյց մըն է իր աստուածային տնօրենուրեանը։

Հրեից աւանդուրիւնն այս է թէ Յիսուսի աշակերտներն իր մարմինը զողցան վերուցին ու ձայն հանեցին թէ յարուրին տուր է։ Այս խօսքին դեմ այնպիսի ապացոյցներ չեմ հանելու որ անհաւաններուն տոցեւն ոյժ չունին։ Հրեայք գերեզմանին դրանը տոցեւ պահապաններ դրել եին. ուրեմն դժուար պիտի ըստ ներս մտնելը. եւ սակայն անկարելի բան չէր զանոնք գինուցընել կամ կաշտելը, վախցընել կամ խարելը, եւ կրիաւանիմ թէ այսպիսի դըւարուրիւնները մեռած մարդու մը ողջընալուն հետ քաղդատելով՝ բերել բաներ են։ Բայց մեկն որ յաւ մոմտայ, մեկն կը-

հասկընայ քէ աշակերտներուն մոքեն ալ
չեր կը նար անցնիլ որ այն զողուրիւնն
ընեն՝ ինչպէս որ ըսուեր է իրենց համար։
Ասոր տարակոյս չկայ քէ կը հաւատային
իրենք Քրիստոսի իրենց ըրած խոստմանը
որ իրեք օրէն յարուրիւն պիտի առնե.
ապա ուրեմն ինչ խենքուրիւն պիտի ըստ
ըրածնին որ սուկալի վտանգներու մեջ
ձգեն իրենք զիրենք՝ այնպիսի անօգուտ
գործողուրեան մը համար, որովհետեւ
սոոյզ զիտէին քէ իրեք օրէն պիտի տես-
նեն իրենց տերը։ Զե, ըսենք քէ Քրիստոսի
խոստմանը կատարուելուն չեին հաւա-
տար. ուրեմն զիտէին քէ խարեր է զիրենք.
այնպէս է նե ինչ պատճառ ունեին իրենք
զիրենք վտանգներու մեջ ձգելու որ խարե-
րայի մը մարմինը գողնան, այնպիսի
խարերայի մը որ անոր համար իրենք
ալ առելի եղեր եին Հրեից։ Թէ որ տարա-
կոյս մը ունեին, քիչ մը խելք ալ բանե-
ցընեին նե՛ պիտի ըսկին քէ սպասենք
մինչեւ երեք օր, տեսնենք խօսքը կելլէ քէ
չէ, փուձ տեղը նեղուրիւն ըրաշենք։

Երբոք Քրիստոսի մարմինը զերեզմանին մեջ ըլլալը խմացուեցաւ, թէ որ յարութիւն առած չէր նև՛ աշակերտներն որ ամբաստանուեցան թէ զողցեր են մարմինը՝ ինչ բանի ձեռք պիտի զարնեին։ Սկսպիսի բնաւորութեան տէր էին անոնք որ յանդուզն զործողութեանց ձեռք զարնելու մարդիկ չեին։ Իրենց վարդապետին կենդանութեանը ատեն անոր համար տաք սրտով մը կեանքերնին այ դնելու յօժարութիւն չեին ցուցուցած։ Մանաւանդ թէ աւետարանին մեջ կը տեսնենք որ Քրիստոս շատ անզամ անոնց երեսին տուեր եր իրենց բերահաւատութիւնն ու վախսկութութիւնը։ Զիրենեաց լեռան ոտքը զիրենք ձգելու ատեն կապսպրէ որ արքուն կենան ու աղօքք ընեն։ Իրեք անզամ քովկերնին կուգայ, իրեք անզամուն այ քուներնին տարած կը զտնէ զիրենք. « Աս ինչ է, կըսէ, հետո մեկ ժամ մըն այ արքուն կենալ չկրցաք։ » Հրեայք զինքը բոնած ատենին՝ ամենքն այ կը ձգեն կը փախչին։ Պետքոս միայն հեռուանց կերպայ ետեւեն։ մեկ երկու կնիկ մարդ իրեն համար ըսկ-

լուն պէս թէ ասիկայ ալ Յիսուսի աշակերտներէն և՛ ձեռքը ոտքը դոդ կեցէ ու սոսկայի երդումներով կուրանայ, ամենեւին չեմ ճանչնար կըսէ այն մարդը :

Թէ որ Քրիստոս յարութիւն չէ առած, աշակերտները իրենց խարուած ըլլալուն վրայ սաստիկ տրտմած, Հրեհց վրեժխրնդրութեան սպառնալիքներէն սարսափած պէտք է որ կամ պահութիւն, կամ փախչին, կամ բողութիւն խնդրեն... Չէ, անհաւանները կուզեն զմեզ համոզել թէ այն մարդիկը, եւ ամէնն ալ, մտքերնին դրին որ աներես յանդգնութեամբ պաշտպանեն ու ջատագովնեն մեկ խարեւթիւն մը որ այ ամեննեւին տարակոյս չեր վերցըներ : Այն մարդիկն որ վարդապետնին քովերնին եղած, զիրենքքաջալերած, ու հրաշագործութիւններ խոստացած առենը տկար էին, ինչպէս կըլլայ որ անոր հետանալէն ու գուշակութիւնները սուտ ելլալէն ետեւ մելմեկ քաջ դիւցազունք դառնան : Արդեօք իրենց յանդգնութենէն ինչ պատիւներու, ինչ հարստութիւններու յօյս ունին : Այն իրենց

հաւատարմութեանը համար ուրիշ ինչ փոխարենի կրնային սպասել, բայց եք քնամութեան, հայածանաց, չարչարանաց : Այն մարդիկն որ իրենց տկարութեամբը կը զգուեցընեին զմեզ, այնպիսի ազնիւ ու գերազանց քաջութիւն մը ցուցընելու համար՝ պէտք է որ խիստ կարգէ դուրս դիպուածներով մտքերնին լուսաւրուած ու սրտերնին ամրցած ըլլայ : Այս հրաշալի փոփոխութիւնը յայտնի կը վկայէ քէ քրիստոնեից պատմած պատմութիւնը ձշմարիտ է, եւ Քրիստոսի յարութեանն ու անկեց ետքը պատահած սքանչելեաց յայտնի ապացոյց է. եւ այս ապացոյցը միայն բաւական կրնար ըլլալ :

Ո՞րչափ այ կրկնութիւն ըլլայ ըրածս՝ կուզեմ նորէն հաստատել այս եական ու ամենահարկաւոր բանը : Շատ անզամ այն մարդիկն որ քրիստոնեական հաւատոյ ձշմարիտ ըլլալը կուզեն քննել՝ իրենց տարակոյսներէն ելլելու համար զիտակ ճամբան չեն բռներ. իրենց մտադրութիւնը երկրորդական բաներու վրայ կըդարձը-

նեն. օրինակի համար՝ կըպահանջեն որ
մեկը բացատրէ իրենց թէ շնորհքը ինչպէս
կըմիաբանի մարդու կամաց ազատու-
թեանը հետ, Ասուծոյ կանխազիտու-
թիւնը իր բարութեանն ու արդարու-
թեանը հետ։ Ես երկու բանն այ մեկտեղ
կըզգամ. կըտեսնեմ որ մեկ կողմանէ
ազատ եմ բարիք գործելու, եւ մեկայ կող-
մանէ օգնութեան մը՝ երկնքեն եկած ուժի
մը կարու եմ որ իմ պարութերս կատա-
րեմ։ Չեմ կընար հասկընայ թէ Ասուծած
առանց կանխազիտութեան կամ առանց
բարութեան եւ արդարութեան ինչպէս
կընայ Ասուծած ըլլալ։ Խիստ պայծառ
կերպով կընամ ըմբռնել թէ շատ բաներ ի
նմին ժամանակի եւ միանգամայն մեկտեղ
կընան ըլլալ, թեպէտ եւ իմ բնութեանս
տկարութեանը պատճառաւ չկարենամ
հասկընայ այն բաներուն ինչ կերպով մեկ-
տեղ գտնուիլը։ Ողջմտութիւնը, այս ինքն
ուղիղ մտածութիւնը աս կըտրվեցընէ։ Թէ
որ ողջմտութեանս պատասխանները բա-
ւական չեն, ու իմաստուն բացաբութիւն-
ներ կուզեմ, ինչ դժուարակնախոն խըն-

դիրներու մեջ պիտի իյնամ ու օգուտ մը
պիտի չկարենամ քաղել՝ ոչ Աստուծոյ փա-
ռացը եւ ոչ մարդկանց լուսաւորութեանը
համար : Մեր այսպիսի փառաւոր խնդի-
րէն մեկդի ձգենք սնոտի քարակուրիւն-
ները : Եիտակ նպատակին դիմենք. քարե-
մուրեամբ .քննենք և ական խնդիրը : Թէ
որ Քրիստոս յարութիւն առեր է, ուրիմն
Աստուած է որ խօսեր է. ովկը կամարձակի
ըսել թէ նոյն խոկ ձշմարտութիւնն ինքը
ցէ:

Անհաւանները քան մը դրած էն մտքեր-
նին որ ոչ երրեք կուզեն հանել : Կուզեն որ
հրաշք ըսածդ անկարելի քան ըլլայ : Ար-
դէն ըսի թէ աստուածեան եղած ատենս ալ
ես անձոռնի մտածութեան տեղ դրած էի
այն մարդկանց խօսքն որ աստուածային
կարողութեանը չափ եւ սահման կուզեն
որոշել . հիմայ ալ կըսեմ թէ այս մեր դա-
րուս մեջ գիտութիւններն այնչափ ծաղկած
են որ երկար ատեն չկընար դիմանալ՝
ամենեւին հրաշք ըրնղունելու նախապա-
շարմունքը : Այն օրն որ մարդիկ հաւանին

այս պարզ եւ բացալայտ ճշմարտութիւնս
ընդունելու թէ « Աստուած անսահման
եակ մի է, » այն նախապաշտմունքն այ
մեկեն կը վերցուի:

Ելայ գնացի որ նորէն տեսնուիմ այն
պատուական քահանային նետ. իմացուցի
իրեն թէ բոլոր տարակոյսներս փարատե-
ցան, եւ սկսայ շնորհակալութիւնս յայտ-
նել: Խօսքս կորեց ու ըստ. « Աստուծոյ
շնորհակալ ըլլանք. հրամանքդ վստահու-
թեամբ խնդրեցիր իրմէ որ միտքդ լուսա-
ւոր. ինքն այ ողորմութեամբ եւ բարու-
թեամբ լսեց աղաջանքիդ: » Այն խօսակ-
ցութեան ատեն իրեն ինծի տուած բացա-
տրութիւններուն իմաստը այսպէս կրնամ
համառօտել. « Ոչ երբէք պիտի մոռնանք
թէ ամենայն բարեաց աղբիւր Աստուած է:
Միայն մարդկային խելքով հաստատուած
համոզմունքները ոչ այնչափ հաւատը կը-
սեպուին որչափ մեյմեկ կարծիք՝ զիրենք
ձեւացընող խելքին պէս փոփոխական.
ուստի մարդուս հոգին մինչեւ անփոփո-
խելի քրիստոնեութեան բարձրութեամբ

հասնելու համար երկնային պարզեւներու կարու է, այս ինքն շնորհաց եւ հաւատոյ։ Այս խոսքերը անհաւանից աչքին առջև աւելորդապաշտական խոսքեր են. ցաւինք իրենց վրայ՝ որ չեն գիտեր թէ երկընքին ու երկրիս մէջ ինչ յարաբերութիւններ կան։ Երջանիկ ենք մենք որ Աստուած ուզեր է անդադար մտքերնիս ձգել թէ կարու ենք իրեն եւ իր իշխանութեանը տակն ենք. վասն զի ոչ միայն հաւատոյ նիւրերուն, հապաամենքանիմէջ այիրենպահած է Աստուած իր անգին պարզեւները տալու կամ չտալու իշխանութիւնը։ Մարդս ինքնիրեն մնալով՝ կարող չեր ըլլար իր նիւրական կենաց պիտոյքն այ հոգալ. իրաւ է որ գետինը կըրանի, իր ձեռքովն արօրը կըվարէ, բայց պետք է որ Աստուած կամենայ շահաւետ անձրեւներ խրկել որ հունտերը ծին, եւ իր արեօակը ոսկեզոյն ներկէ մեր ցորենները։ Ինչպէս որ աշխատութիւնը բաւական չէ նիւրական կենաց համար, այսպէս այ մարդուս խելք բանեցընելը բաւական ըլլար բարոյական կենդանութեանը համար։ »

Պատուական քահանան իր խօսքը վերջացուց ու գրկեց զիս. « Աղօքք ընենք, ըստ, աղօքք ընենք՝ թէ քեզի եւ թէ ինծի համար : » Ծունկ չոքեցայ քովը. Եւ հոգիս կարծես թէ իրեն հոգւոյն հետ միանալով՝ անոր եռանդեանը մասնակից կը լար. այնպէս երեւցաւ ինծի որ իբր թէ ճշմարտութեան Աստուծոյն պաշտօնեան իր առաքինութիւններուն մէջ ծրաբեց զիս, եւ իմացայ սրտովս որ Ամենակարողն Աստուած լսեց իմ աղաջանքս :

Դեռ նոր լմբնցուցեր էի այս իմ մոլորու-
թեանցու և աստուածային նախախնամու-
թեան վրաս ցուցուցած գրութեան պատ-
մութիւնները, և ահա յանկարծ յեղափո-
խութիւն մը ելաւ : Տարիքիս պատճառաւ
ոյժս մարելու վրայ է. այնչափ միայն և
նիմակուան կարողութիւնս որ ձեռուըներս
կընամ դեպ ի երկինք վերցընել. և կը
տեսնեմ որ անոնք այ կը յոզնին կը ծան-
րանան. բայց մինչեւ վերջի շունչս իմ
սրուկսը բարեմաղրութիւններ պիտի բոլիսին
հայրեննեացս համար :

Աստուածպաշտութիւնն որ ամեն տեղ
հարկաւոր է՝ անհրաժեշտ հարկաւ կարե-
ւոր է այն ժողովրդոց որ ազատութիւն
կըսնի կերրան : Իր հայրեննակցաց իրա-

ւանցը համար կեսաքը դնող մարդուն
մեկը, այս ինքն Օքոնել, քանի մը հասա-
րակապետական գաղղիացիներէ հրատի-
բուեցաւ օր մը որ զայ իրենց ջատազովու-
րին ընկ քաղաքական դատաստանի մը
մէջ. հրաժարեցաւ այս բանես՝ պատճառ
բերելով Խոլանտայի մէջ ունեցած բազ-
մարիւ աշխատանքները. եսքն այ հարկ
համարեր եր այս բանս ըստի. « Ես չեմ
կարծեր թէ Գաղղիան այնչափ բարեպաշտ
է որ կարելի ըլլայ այսօրուան օրս իր կա-
ռավարութիւնը հասարակապետութեան
դարձընել: » Կուզեննք այս խօսքիս գօրա-
ւոր եւ անյաղբելի պատասխան մը տայ.
սիրու ընենք ճանչնալու թէ այն խօսքին
խկութիւնը ճշմարիտ է:

« Քանի մը տարի կայ որ այս բանս գրած
եմ թէ « Հանրական ինքիշիանութեան եւ
մարդկային ազգի ազատութեան գաղա-
փարները աւետարանեն ծնած են. բայց
այս գաղափարներնի գործ դնելու համար՝
Քրիստոս տէրն մեր միացուցեր եր զա-
տնք խաղաղութեան եւ սիրոյ կրօնի մը

հետ։ Մարդուս կիրքերը ուրիշ կարգա-
ւորութիւն ըրին։ Հարկաւոր կապակցու-
թիւնները խզուեցան. այն բանն որ անրա-
ժանելի պիտի մնար՝ անմտաց ձեռքովը
բաժնուեցաւ. ազատութիւն կուզեն ու եղ-
բայրսիրութիւնը մեկողի կը ձգեն։ Այն ա-
տեն հարկաւ յառաջադիմութիւններն այ-
սարեական կը լլան, չորիք կամին այն
հողին վրայ ուր կը կը կարծուեր թէ բարիք
կը կը անուի. իրարու օգնելու տեղ՝ մարդիկ
կը փողոտեն մեկզմեկ¹։ »

Այս դժբաղդ բաժանումն է այն մեծ
արգելքն որ վարսուն տարութնէ ի վեր
բող չիտար որ ազատութիւնը մեջերնիս
հաստատուի։ Այս ըսած պատճառիս նայե-
լով՝ մեկայ ամեն երկրորդական պատ-
ճառներն այ տկար ու աննշան են։ Ան-
դադար կալեկոծինք կաշխատինք օրէնք-
երը՝ սահմանադրութիւնները՝ կառավա-
րութիւնները փոփոխելու. կարծեսք մը տ-

¹ Խորհրդածութիւնք, 19:

Նիս դրած ենք որ կարելի բան է մեքենա-
կան հնարքներով վերանորոգել զմարդիկ :
Եթոր կը տեսնենք թէ մեր աշխատանաց
պտուղը ոչինչ բան է՝ կը զայրանանք, ու
յանցանքք մարդկային ընկերութեան վրայ
կը ձգենք. եւ այնպէս կերեւնայ թէ այս
ընկերութիւնը նորոգել կուզենք գրեթէ այն-
պիսի հնարքներով որ Յատնի դստերքք
բանեցուցեր են՝ իրենց հայրը մանկացընե-
լու համար ¹: Ազատական կառավարու-
թեանց կենդանութիւն տուողը աստուա-
ծային զգացմունք մըն է՝ մարդկանց սիր-
ութ տարածուած : Այս զգացմունքը առաջ
կուգայ այնպիսի խորունկ եւ մաքուր
սկզբունքներէ որ շատերնուս քով չկան,
կամ զեր այնչափ զօրաւոր չեն որ մեր
թշուառութիւնները վերջացընելու կարո-
ղութիւն ունենան :

¹ Ըստ առասպեկեաց, Յատնի (կամ Պեղիասայ) աղ-
ջիկները Մեղեա կախարդին խարեական խրատին մտիկ
ընելով, իրենց հայրը մորքեցին ու մարմինը կտոր
կտոր ըրած եփեցին՝ մինչեւ որ բոլոր միար հայի. եւ ոչ
միայն չկրցան զինքք կենդանացընել ու մանկացընել,
այլ եւ ոչ բաղման հանդէս կրցան կատարել անոր
մարմնոյն վրայ. Թ:

Փետրուար ամսոյն մեջ¹ Երբորտեսայոր հասարակապետութիւն հրատարակուեցաւ, յանկարծակիի եկայ. Եւ որովհետեւ դժբաղդուրեամբ եւ երկար փորձառութեամբ զիտէի քէ յեղափոխութիւն ըստածն ինչ բան է, պաղ արեամբ սկսայ դիտել քէ ինչ բաներ պիտի ըլլան։ Լուսի քէ փորորկին ատենը մեծարանաց նշաններ տրուեր են սրբազն բաներուն. տեսայ որ ժողովուրդը սիրով կը մօտենայ քահանաներուն, կը խնդրէ որ օրինեն քաղաքական նշանները. քահանայք ամենայն յօժարութեամբ կը փուրան այն օրինաւոր աղաջանքները կատարելու, անոնցմէ մեկն ալ ժողովրդեան եռանդը աւելի կը բորբոքէ՝ այս խօսքերս ըսելով. « Երկու հազար տարուընէ ի վեր է որ ազատութեան ծառը տնկուեր է Գողգոթա յեռան վրայ. ² » Եղբայրութիւն բառը՝ որ աւետա-

¹ 1848ին։

² Փետրուարի յեղափոխութեան ատենն ալ Գաղղիացիք ազատութեան ծառեր տնկեր եին Փարիզումեջ, որ յետոյ կտրուեցան։

բանին համառու բովանդակութիւնն է՝
այնչափ ձայներու բազմութեամբը հրա-
տարակուեցաւ. այս բաներս լուսով ու
տեսնելով՝ կարծեցի թէ Փարիզու մեջ
Հովվմայ ձայներուն արձագանքը կը լուս
որ Պիոսի իններորդի ձայնեն կը զմայէր.
կարծեցի թէ այն աստուածաղտութեան
եւ ազատութեան դաշնակցութիւնն որ
Քրիստոսի ուզածն է՝ կատարուելու վրայ
է. ուստի անպատմելի ուրախութեամբ
սիրոս լեցուեցաւ:

Աւաղ. այն ինչ սարսափելի տեսարան-
ներ եին որ ետքը եկան իմ յոյսերս մթն-
ցուցին, սասանեցուցին, եւ գրեթէ ոչնչա-
ցուցին¹: Թէ որ վհատինք՝ ամեն բան կը
փճանայ. նայինք որ առ Աստուած ապա-
ւինութիւննիս ձեռքէ չձգենք:

Աստուածաղտութիւնը այն առեն ազ-

¹ Նոյն 1848 տարւոյն մայիս եւ յունիս ամսոցը մեջ
ելած խոռվութիւններն ու սուկափ քաղաքական պո-
տերազմները. Թէ:

դեցութիւն կընէ մարդկանց սրտին վրայ՝
երբոք հասարակ բանի տեղ չդրուի: Ինչ-
պէս որ ըստ, հաստատուն եւ մաքուր հա-
ւատք հարկաւոր է: Այս բանիս ապացոյց
ըլլայու համար անրիւ օրինակներ կան.
Երկուքք միայն ընտրեմ որ յիշելն այ դիւ-
րին է: Բազմաթիւ ժողովրդեան մը ապրե-
լուն համար ամենահարկաւոր է որ ճար-
տարութիւնը շատ ծաղկած ըլլայ. ուստի
հարկ է որ ազատ այ ըլլայ ճարտարու-
թիւնը: Բայց որովհետեւ ամեն բանի մէջ
պակասութիւններ կան, ոսխութեանց
վնասներուն դիմացն առնելու եւ կամ այն
վնասները քիչը ընելու համար այ՝ ուրիշ
ամեն կանոններէ եւ պատժական օրենք-
ներէ գորաւոր հնարք՝ արդարասիրու-
թեան, պատույ, մարդասիրութեան զգաց-
մունքներն են որ պէտք է ամեն տեղ ծա-
ւալել: Ես միտքս չեմ դրած քէ այս զգաց-
մունքներն հիմա ամեն տեղ մարած են.
բայց մէյմը յաւ մտածէ. երէ կուզես որ վա-
ճառականութեան հետ զբաղած մարդիկ
իրենք իրենցմէ չափ դնեն իրենց վաստա-
կին, երէ կուզես որ խղճմտանքին չհստած

շահերէն ետ կենան, անստով եւ հասարակ բարոյականը այս բանիս համար ամենեւին բառական չէ: Կրօնական կրութենէն առաջ եկած բոլոր սովորութիւններուն ոյժը հարկաւոր է: Ազատութիւն, Հաւասարութիւն, Եղբայրութիւն¹. շատ գեղեցիկ նշան: Աւետարանն է մեզի այս նշանս սուսողը. բայց քէ որ այս նշանը զատենք այն օգնութիւններէն որ աստուածային գիրքը կըցուցընէ մեզի՝ նշանին խուքերը հասկընալու եւ ի զործ դնելու համար, այդ խուքերը՝ անկենդան գրուածքի պէս կըմնան՝ հասարակաց շէնքերուն վրայ. մեքենայի պէս կըկարդան մարդիկ զանոնք. աչքի կերեւնան, սրտին բան մը չեն ըներ:

Այս համառօտ դիտողութիւններս անշուշտ այս գրքուկիս նիւթէն կամ զէք նպատակէն դուրս չեն սեպուիր: Երբոր մեր

¹ Այս երեք բառերը Փարփառ ամէն հասարակաց շէնքերուն վրայ գրել տուեր եք հասարակապետութիւնը. յետոյ ջնջուեցան:

խորվութիւններէն առաջ պատրաստուեր
էի ասիկայ հրատարակելու, վերջի խօս-
քերս ատնք էին.

Բարոյական եւ կրօնական ճշմարտու-
թեանց մէջ երեք հատ կան որ ուրիշներէն
աւելի տարածելը ամենահարկաւոր է.

Ա. Աստուածեանց կարծիքը 'չկընար
մարդկանց հաստատուն ամրութիւն մը
տայ. հաւատոյ վարդապետութիւններն ու
բարեպազտական կրթութիւններ հարկա-
ւոր են որ մարդուս հոգին մաքրեն ու
զօրացընեն:

Բ. Քրիստոնեայ ըլլալու համար՝ հաւա-
տոյ վարդապետութիւններն ընդունիլն ու
աստուածպաշտութեան կրթութիւնները
բաւական չեն. պէտք է որ մարդուս
գործքերը, խօսքերն ու մտածմուքներն այ
համաձայն ըլլան աւետարանի խրան-
ներուն :

Գ. Ամենայն չափազանցութենէ զգուշա-

նաեւ, սուրբ Առաքեալն ըստ է թէ « Զափաւորութիւն պէտք է ունենալ՝ նոյն խոկ իմաստութեան մէջ անզամ : »





